सफलता के आठ वर्ष

वर्ष 8, अंक 03 इलाहाबाद दिसम्बर 2008

विश्व स्नेहसमाज

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

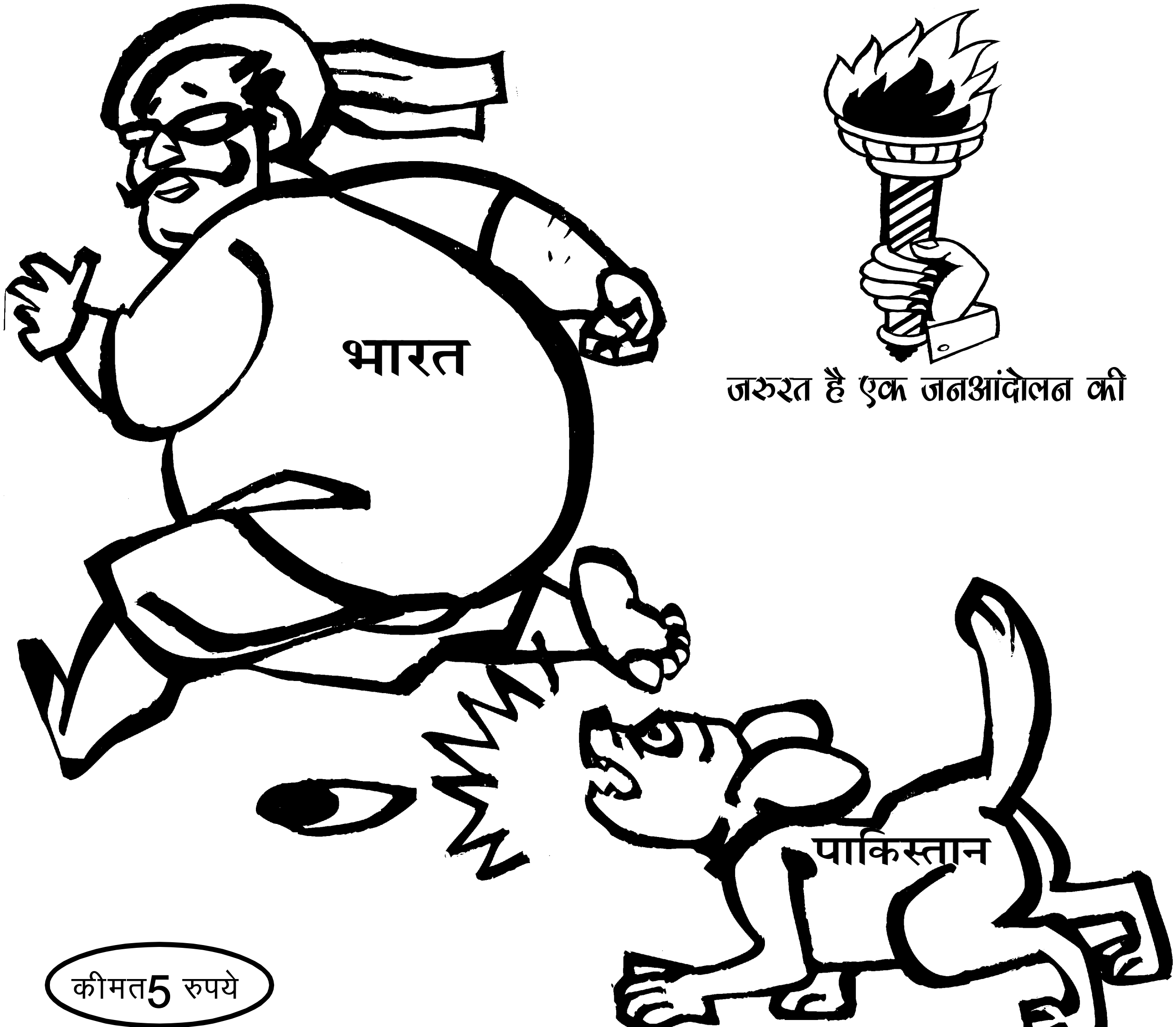

जरुरत है एक जनआंदोलन की

कीमत 5 रुपये

आतंकवादियों के खिलाफ कठोर कदम उठाने होगें

पत्र/पत्रिकाएं एवं पुस्तकें आमंत्रित

साहित्य मेला ०६ के अवसर इस वर्ष दो दिवसीय पत्र/पत्रिका एवं पुस्तक प्रर्दशनी आयोजित की जा रही है. जिसमें सम्पूर्ण भारत से करीब ५०० पत्र/पत्रिकाएं एवं करीब पॉच हजार पुस्तकों को विक्रय/प्रदर्शन के लिए रक्खे जाने की सम्भावना है. इस पुस्तक प्रदर्शनी हेतु देश/विदेश के संपादको/लेखकों/प्रकाशकों से पत्र/पत्रिकाएं/पुस्तकें आमंत्रित है. पाठकों द्वारा सर्वाधिक प्रशंसित पुस्तक को सम्मानित किया जायेगा एवं पांच अन्य श्रेष्ठ प्रशंसनीय पुस्तकों को प्रमाण पत्र प्रदान किया जायेगा. कृपया अपनी पुस्तकें ३० जनवरी ०६ के पूर्व कार्यालय को प्रेषित कर देवें.

किसी अन्य प्रकार की जानकारी के लिए कार्यालय के पते पर लिखेंः

रचनाएं आमंत्रित है

ए आग कब बुझेगीः

इसमें आरक्षण/भ्रष्ट्राचार/दहेज/जातिवाद/नारी शोषण/ राजनीति से संबंधित आलेख/कविताएं/ कहॉनिया/लघुकथाएं/व्यंग्य रचनाएं/संस्मरण आमंत्रित है. इस बात विशेष ध्यान रक्खें कि रचनाएं १५०० शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा २५०/-रुपये अथवा दो रचनाएं ५००/- रुपये सहयोग राशि के साथ

अंतिम तिथि : १५ मार्च २००६

आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०ःएस.बी. 538702010009259 में सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है.

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखेंः

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद—211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

आमंत्रणः पत्र

६वाँ साहित्य मेला

कार्यक्रम विवरण

शनिवार, १४ फरवरी २००८

साहित्य मेला का उद्घाटन	-प्रातः ०६:०० बजे से सहभागियों का पंजीकरण -राष्ट्र स्तरीय पत्र-पत्रिका एवं पुस्तक प्रर्दशनी का उद्घाटन
कवि सम्मेलन	-अपरान्ह ०४:०० बजे से सायं- ०८:०० बजे तक

रविवार, १५ फरवरी २००८

परिचर्चा	- प्रातः ६:०० बजे - वर्तमान समय में साहित्यकारों की भूमिका
बाल्य काव्य प्रतियोगिताः	- ११:३० बजे से १२:३० बजे तक
अपरान्ह आहारः	- १२:३० से २:०० बजे तक
सम्मान समारोह :	-अपरान्ह २:०० बजे से सायं ४:३० बजे तक -पत्रिका के १००वें अंक (सुश्री बी०एस०शांताबाई) विशेषांक व पुस्तकों का लोकार्पण -राष्ट्रस्तरीय सम्मान व अलंकरण, सामूहिक राष्ट्रगान व समापन

स्थानः

हिन्दुस्तानी एकाडेमी,
(हनुमान मंदिर, सिविल लाईन्स चौराहा से 50मी0 की दूरी पर) प्रयाग संगीत समिति के पास, सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

कृपया अन्य किसी आमंत्रण/सूचना की प्रतीक्षा न करके कार्यक्रमानुसार समारोह में उपस्थित होकर सहयोग प्रदान करें!

कृपया ध्यान दें:-

१. मेला स्थल, रोडवेज बस अड्डा, सिविल लाईन्स से मात्र १०० मीटर की दूरी पर है। बस स्टेशन चौराहे से आगे बढ़ने पर अगला चौराहा हनुमान मंदिर है। वहॉ से बॉये मुड़कर मात्र ५० मी० की दूरी पर दायी ओर प्रयाग संगीत समिति के बगल में स्थित है। मेला स्थल के सामने कैरियर कोचिंग इंस्टीट्यूट तथा आगे कंपनी बाग का गेट है।

२. रेलवे स्टेशन पर सीटी साइड उतर कर टेम्पों के द्वारा सिविल लाईन्स हनुमान मंदिर उतर कर वहॉ से पैदल ५ मिनट की दूरी पर. संभावना है कि रेलवे स्टेशन के बाहर प्रातः ८ बजे से ६ बजे तक साहित्य मेला का बैनर लगी हुई कोई गाड़ी आपको मिल जाए। ड्राइवर को अपना आमंत्रण पत्र दिखाकर कार्यक्रम स्थल पर पहुंच सकते है। वैसे इसकी प्रतीक्षा न करें।

३. साहित्य मेला में हमारी व्यवस्था १४ फरवरी के प्रातः १० बजे से १५ फरवरी की सायं ५:००बजे तक उपलब्ध रहेगी. इसमें जलपान, भोजन तथा सामूहिक आवास की भी व्यवस्था शामिल है. सहभागीगण सीधे कार्यक्रम स्थल पर ही पहुंचे.

४. कार्यक्रम स्थल पर आने के बाद परिचर्चा एवं काव्य संध्या के लिए नाम शामिल नहीं किया जाएगा. परिचर्चा हेतु अपना आलेख एवं कवि सम्मेलन में सहभागिता के लिए अपना नाम पूर्व में ही भेज दें.

४. अपने आगमन की सूचना ०५ फरवरी तक अवश्य दे देवें जिससे कोई असुविधा न हो।

५. सम्मानित होने वाले अतिथियों को छोड़कर अन्य सभी सहभागीयों को शुल्क के रुप में विश्व स्नेह समाज/विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की वार्षिक सदस्यता के रुप में प्रति व्यक्ति रु० १५०/-मात्र देना होगा। यह राशि आप धनादेश/डी.डी. या संस्था के ***यूनियन बैंक ऑफ इंडिया*** की किसी शाखा में खाता सं०:एस.बी. ५३८७०२०१०००६२५६ में भी जमा कर, जमा पर्ची व सूचना के साथ भिजवायें.

६. कार्यक्रम स्थल पर पहुंचकर अपना पंजीकरण अवश्य करावें। पंजीकरण के समय ही आपको एक कार्ड मिलेगा। उसी कार्ड के माध्यम से आपको रहने/खाने/जलपान की व्यवस्था सुनिश्चित होगी।

७. सम्मानित होने वाले विद्वजन पंजीकरण करावें वे अपना सम्मान हेतु चयन का पत्रक दिखाकर कार्ड प्राप्त कर सकते हैं। विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के सदस्य गण आपना सदस्यता कार्ड अवश्य साथ लावें। वे अपना कार्ड दिखाकर पंजीकरण करा लेवें। बिना कार्ड के उन्हें प्रदत्त सुविधा नहीं मिल पाएगी।

कार्यक्रम संयोजक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्षः८ अंकः४जनवरी ०९, इलाहाबाद

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, बलिया

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रतिः रु०५/–
वार्षिकः रु० ६०/–
विशिष्ठ सदस्यःरु० १००/–
द्विवार्षिकसदस्यःरु०११०/–
पाच वर्ष–रु०२७०/–
आजीवन सदस्यः रु०१००१/–
संरक्षक सदस्य :रु० २५००/–

अंदर के पन्नों में:

राष्ट्रीय नेतृत्व का संकट 07

पर्यावरण जागरुकता में मीडिया का महत्व 11

सामाजिक संगठन एवं कार्यकर्ता 15

राज ठाकरे का आतंकवाद १८

टीपू ने किया था रॉकेट का आविष्कार ३२

अपनी बात	–	०४
प्रेरक प्रसंग	–	०६
हर कानून को धुएं में उड़ाता चला गया		१०
बैंक अफसरों को सता रहा जाली नोट का भूत		१०
कहॉनी–भीलड़ रेशमा	–	१२
व्यक्तित्व	–	२२
अध्यात्मः		
संकीर्तन प्रेमी संत महात्मा भोली बाबा		२३
मुर्दो की आंख का भी कारोबार		१६
कहॉनीः हथौड़ी–		१७
कहॉनीः दिलेर दर्जी		२०
स्नेहबाल मंच–		२५
कविताएं–		१३,१४, १७, २०, २१,२६
साहित्य समाचार–		२१,२४,२७,२८
स्वास्थ्य–		२८
चिट्ठी आई है–		२६
लघु कथाएं–		३१
हंसना मना है–		३२
पुस्तक समीक्षा–		३३

अपनी बात

आतंकवादियों के खिलाफ कठोर कदम उठाने होगें

हम अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की अहिंसात्मक लड़ाई की जीत को वर्तमान समय में भी ढो रहे है. हम आज भी हर लड़ाई को शांति व अहिंसा से जीतना चाहते है. या दूसरे शब्दों में यह कहें कि हमारे जननेता गांधी जी के अहिंसा के सिद्धात को, अपनी मक्कारी, कायरता को छुपाने के लिए इस्तेमाल कर रहे है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी. चाहें वह कारगिल की लड़ाई हो, संसद पर हमला हो या मुंबई का यह ताजा तरीन भयानक, विभत्स हादसा. जब भी इस तरह की आतंकी घटनाएं होती है, हमारे सत्ता के लालची नेता हम साथ-साथ है, आप लोग धैर्य रक्खें, हम आतंकवादियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही करेंगे कहकर फिर वहीं राग अलापने लगते है. एक विशेष सम्प्रदाय के वोट की लालच में सख्त कार्यवाही करने से डरते है, यह किसी एक पार्टी की बात नहीं है, यह कांग्रेस, अपने को राष्ट्रवादी कहने वाली भारतीय जनता पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, समाजवादी पार्टी, जनता दल यूनाइटेड या अन्य कोई भी दल हो सबका यही हाल है. बटला कांड में शहीद हुए दिवान की शहादत को हमारे अमर सिंह जैसे कुछ नेता आतंककियों के घर सहानुभूति प्रकट करने पहुँच जाते है, आतंकियो के मारे जाने की न्यायायिक जांच की मांग करने लगते है, पाकिस्तान के खिलाफ कुछ बोलने में शर्माते है. जैसे कुछ बोल देंगे तो उनकी जान चली जाएगी. क्या यह बात किसी से छिपी हुई है कि आतंकवादी चाहे वह किसी जाति/धर्म/सम्प्रदाय का हो वह मारते समय, बम ब्लास्ट करते समय किसी की जाति/धर्म को नहीं पूछता. रमजान के पाक महीने में आतंक फैलाने वाला क्या सच्चा मुसलमान है. मुंबई कांड में ही एक मुस्लिम महिला जो दहाड़े मार-मारकर अल्लाह की गुहार इसलिए लगा रही थी कि उसका पति, उसके बच्चे, उसकी ननद, दामाद सबके के सब शिवाजी टर्मिनल पर आतंक के शिकार हो गये थे. क्या मुस्लिम भाईयों को नहीं मालुम कि ये नेता बटला कांड की न्यायिक जांच की मांग सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए कर रहे है. देश का, समाज का सच्चा हितैशी वह है जो गलत को गलत कहें, उसके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही करने की मांग करें, उसे किसी सम्प्रदाय, जाति विशेष के चस्में से न देखे. आतंकवादी आतंकवादी है, उसके खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही की ही जाने चाहिए बिना किसी भेदभाव के.

हमारे देश की खुफिया एजेंसिया, सरकारें घटनाओं के घटित हो जाने के बाद एक दूसरें पर दोष मढ़ कर अपना पल्ला झारने का प्रयास करती है. हमने तो राज्य सरकार को एक माह पूर्व ही सुचना दे दी थी. अरे क्या सुचना देकर तुम्हारे कर्तव्य की इतिश्री हो गई. हमारे कायर नेता कहते है तुम्हारे शासन काल में ३००० आतंकी घटनाएं हुई, हमारे काल में ७०. जैसे आतंकी घटना होना इनके सुशासन का प्रमाण हो. अगर ऐसे ही हम सोते रहे तो वह दिन दूर नहीं, जब नेताओं व अमीरों के परिवार विदेशों में जाकर रहेगें सुरक्षा के लिए और हमारो देश के बुझदिल नेता विदेशों में रहकर मोबाइल व नेट से शासन चलाएगे, और गरीब जनता आतंकियों द्वारा घास फुस की तरह काटी जाती रहेगी. हमें इस्राइल से सीख लेनी चाहिए. जहां की सरकार ने आतंकवादी वारदातों से निपटने के लिए पुख्ता इंतजाम किए है. उसकी खुफिया एंजेसी मोसाद दुनिया की सबसे चौकस खुफिया एजेंसियो में गिनी जाती है. वहां का हर नागरिक चौकस है. कहीं भी आशंका होने पर तुरंत पुलिस को खबर करती हे. अमेरिका को लीजिए जिसने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए आतंकी हमले के बाद अपनी आतंरिक सुरक्षा को मजबूत करने के साथ ही साथ कड़े कानून पारित किए, खुफिया एजेंसियों को और चाक चौबन्द किया. टेररिस्ट एक्सक्ल्यूजन सूची बनाई फॉरेन इमरजेंसी सपोर्ट टीम और डोमेस्टिक इमरजेंसी सपोट टीम का गठन किया. सीआईए की एक शाखा केवल डीसीआइ कांउटर टेररिस्ट सेंटर बनाई जो केवल आतंकवाद से जुड़े मामले को ही देखती है. पाकिस्तान की सीमा में घुस कर अलकायदा पर हमला कर रही है. और हम हाथ पर हाथ धरे बैठते रहते है. बस वही लकीर फकीर पिटते रहते है.

आम जनता को भी जागरुक होना पड़ेगा, उन्हें कहीं भी कोई सदिग्ध व्यक्ति, वस्तु दिखाई दे तो तुरंत पुलिस को १०० नंबर पर सूचित करें. अगर संभव हो तो निकटम थाने में सूचना दें. हालांकि हमारी पुलिस भी सोती ही रहती है लेकिन कुछ प्रतिशत तो प्रभाव पड़ेगा ही. हमें अपने देश के इन कायर जननेताओं के खिलाफ आंदोलन चलाना होगा, इनसे चुनाव के समय जबाब मांगना होगा कि क्या किया? क्यों आपको वोट दें. तुम्हें कुर्सी चिपके रहने के लिए यह घिनौना खेल नहीं खेलने देगें. अगर हमें सुरक्षा नहीं दे सकते, और अपनी सुरक्षा में करोड़ों, अरबों रुपये पानी की तरह बाहते हो, आखिर किसलिए?

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रेरक प्रसंग

महापुरुष लिंकन

सिर फिरी लड़की ने लेनिन को गोली मारी,
गोली निकली, गले में छर्रे रह गये फॅस।
इसी बीच पुल टूटा, लोग बनाने में जुटे,
लेनिन भी भारी शहतीर उठाते विहॅस।।
लोग पूछ बैठे, 'आप ऐसा क्यों उठाते कष्ट,
आहत है, भारी भार उठाना नहीं स्ववश।
लेनिन ने कहा, 'हम अग्रणी कहाने वाले
पीछे रहे तो क्या जनोत्साह न जायेगा धॅस?

::

आजादी के दीवाने सुभाष

मित्र ने सुभाष से कहा, 'बहुत उम्र हुई! अब आपको विवाह कर लेना चाहिए' नेताजी ने कहा कोई इच्छित दहेज दे तो मुझे कोई कष्ट नहीं होगा ब्याह के लिए. मित्र बोला-'आप ब्याह करिये तो मुॅह मांगा आपको दहेज मिल जाएगा जो लीजिए.' नेताजी ने कहा-'आप बात करें, मुझको तो देश की आजादी ही दहेज दिलवाइये.'

डॉ० राजेश दयालु, लखनऊ-६

::

असली धन तो ध्यान है

सम्राट प्रसेनजित भगवान महावीर का प्रवचन सुनने गए. प्रवचन में उन्होंने कहा, 'वे लोग भ्रमित हैं, जो सांसारिक वस्तुओ, संपत्ति व पुत्रों को सर्वस्व मानते हैं और संसार में ही रमकर मानव जीवन गंवा देते है'

प्रसेनजित ने प्रवचन के बाद महावीर के चरणों में बैठकर पूछा, 'भगवन, आपकी दृष्टि में सच्चा धन क्या है?' महावीर ने कहा, 'मेरी दृष्टि में सबसे बड़ा धन ध्यान है. ध्यान से ही मानव को सच्चा व आत्मिक संतोष मिल सकता है. ध्यान का अभ्यासी पुरुष कभी दुखी नहीं होता.'

प्रसेनजित ने कहा, 'भगवन, मैंने बड़े-बड़े राज्य अपने अधीन किए हैं. ऐसी कोई वस्तु नहीं, जिसे मैंने चाहा और प्राप्त न किया हो. आप सिर्फ मुझे इतना बता दें कि ध्यान कहां और किसके पास मिलेगा, मैं उसे भी हासिल कर लूंगा. चाहे उसके लिए मुझे कितनी भी संपदा खर्च करनी पड़े.' महावीर हंसे तथा बोले, 'ध्यान ऐसी दिव्य व अनूठी संपदा है, जिसे खरीदा या जीता नहीं जा सकता. उसे प्राप्त करने कहीं बाहर नहीं जाना पड़ता. उसे शुद्ध पवित्र मन से, दुर्व्यसनों से मुक्ति पाकर एकाग्रचित होकर सहज ही प्राप्त किया जा सकता है.

::

अगम अगोचर हे अनादि आदि अन्त अज्ञात,
कण में, अणु में, जड़ जीवन में तुम ही तुम हो व्याप्त।
रहे कल्पना लोक में जीवन से अनभिज्ञ
जीवन वृत में फॅस गए बनते जो मर्मज्ञ।।
गर्म राख से ढंक गई चिन्गारी कुछ ढेर
वायु चली तो बन गई विकट ज्वाला का ढेर।

कुछ अनमोल वचन

जो अकेला खाता है वह पापमय है. ऋगवेदं

तुम्हें मन में विषाद नहीं करना चाहिए, क्योंकि विषाद बहुत बड़ा दोष है. बाल्मीकि रामायण

शंका के मूल में श्रद्धा का अभाव रहता है. महात्मा गांधी

श्रद्धा बीज है, तप वर्षा है. सुत्त निपात

सम्पत्ति से नहीं, सद्बुद्धि और सद्प्रवृतियों से असली उन्नति होती है. श्रीराम शर्मा आचार्य

पी.एस.भारती,बरेली

::

मुक्तक

शुभ महूरत है

मॉ से बड़ी नहीं कोई जग में खूबसूरत है।
मॉ समता ममता की अकेली मोहिनी मूरत है।।

श्रद्धा से पॉव छूओं और काम हुआ समझो,
इस कालिकाल में यह सबसे बड़ा शुभ मूहूरत है।।

वंशी लाल 'पारस', राजस्थान

मुद्दा

आर्थिक उथल पुथल

- नौकरी पर रखना आसान होता है किन्तु को नौकरी पर रखकर निकालना बहुत ही टेढ़ी खीर
- वोट की राजनीति के चक्कर में सरकारी कर्मचारियों व अर्द्धसरकारी कार्यालयों में अंधाधुंध वेतन वृद्धि की गयी है. बैंक एवं बीमा कम्पनी के एक कर्मचारी के वेतन से २० परिवार पाले जा सकते है.

✍ **हितेशकुमार शर्मा,** बिजनौर, उ०प्र०

आर्थिक उथल-पुथल की तुलना यदि हम ऐसे गुब्बारे से करे जिसमें क्षमता से अधिक हवा भरी जा रही हो और परिणाम स्वरुप वह फूट जाये स्थिति आसानी से स्पष्ट हो सकती है. जिस प्रकार से मल्टीनेशनल कम्पनियों ने अपने यहां अंधाधुन्ध भर्ती की थी और भारी-भारी पैकेज अपने कर्मचारियों को दिये थे. उससे ऐसा लग रहा था कि या तो कम्पनियों में अंधाधुन्ध आमदनी हो रही है अथवा प्रतिस्पर्धा के चक्कर में मोटे-मोटे वेतन देकर कम्प्यूटर इंजीनियरों को व्यावसायिक मैनेजरों को लुभाया जा रहा है. लेकिन यह तय था कि इसका हश्र अच्छा नहीं होगा. प्रतिस्पर्धा के दौर में योग्यताओं, प्रतिभाओं को मोटे-मोटे वेतन देकर अपनी कम्पनी में रखना अच्छी बात है किन्तु वेतन इतने भी नहीं होने चाहिए कि कम्पनी का सारा लाभ सारी पूॅजी वेतन में ही निकल जाये और यही हुआ. हर कम्पनी ने आवश्यकता से अधिक भर्तियां की, क्षमता से अधिक वेतन दियें. परिणामस्वरुप कंपनियां घाटे में आ गयी और कर्मचारियों को निकालने पर विवश हुई. नौकरी पर रखना आसान होता है किन्तु किसी को नौकरी पर रखकर निकालना बहुत ही टेढ़ी खीार. परिणाम हुआ कम्पनियॉ घाटे में आ गयी और कर्मचारियों को निकालने को विवश है और निकाले जा रहे कर्मचारी आन्दोलन पर उतारु. सम्पूर्ण विश्व अपनी इस गलती का खामियाजा उठायेगा. एक कम्प्यूटर इंजीनियर को एक मैनेजर को एक लाख रुपया मासिक से अधिक वेतन और अन्य सुविधायें साथ में देकर जिन कम्पनियों ने नियुक्तियॉ दी थी. वह सभी कम्पनियॉ आर्थिक दृष्टि से घुटनों के बल चलने को मजबूर हो गई हैं. रु० ५ लाख प्रतिमाह वेतन पर नियुक्ति देने वाली कम्पनियॉ शीघ्र ही बन्द होने के कगार पर है. क्षमता से अधिक हवा भरने पर जैसे गुब्बारा फूटता है ऐसे ही आर्थिक सामर्थ्य से अधिक, वार्षिक लाभ को ध्यान में न रखते हुए लम्बे चौड़े वेतन पर कर्मचारियों की नियुक्ति करना अपना दुष्परिणाम दिखाने लगा है.

वोट की राजनीति के चक्कर में सरकारी कर्मचारियों, बीमा तथा बैंक वह अन्य अर्धसरकारी कार्यालयों में अंधाधुंध वेतन वृद्धि की गयी है. बैंक के एक कर्मचारी को और बीमा कम्पनी के कर्मचारी को जो वेतन मिलता है वह २० परिवार को पालने के बराबर होता है. आखिर कोई सीमा वेतन वृद्धि की निश्चित होनी चाहिए. रु० ५००००/-महीना वेतन प्राप्त करने वाला कर्मचारी इतना काम नहीं करता जितना वेतन लेता है लेकिन कोई भी सरकार वोट बैंक खो देन के डर से जरा सी भी हड़ताल होने पर तुरन्त वेतन बढ़ाने को तैयार हो जाती है. परिणाम होता है, ऐसी कम्पनी, बैंको, और निगमों का आर्थिक दृष्टि से टूटना.

सांसदों व विधायकों को दी जाने वाली करोड़ों रुपयों की राशि जो सांसद व विधायक निधि के रुप में दी जाती है, वह भी इस आर्थिक उथल-पुथल की जिम्मेदार है. जो काम सरकार को सीधे-सीधे करना चाहिए उसके लिए पहले पैसा सांसदों और विधायकों को दिया जाये यह उचित नहीं है. इससे भ्रष्टाचार बढ़ता है. पैसे का सदुपयोग नहीं होता कुछ सांसदों और विधायको को छोड़कर यह सांसद और विधायक निधि देश के काम नहीं आती. केवल कुछ व्यक्तियों की क्रय शक्ति बढ़ाने से सुखद परिणाम नहीं आते बल्कि दुष्परिणाम सामने आते हैं. सांसद और विधायक निधि केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए सांसदों और विधायको द्वारा बनाये गये कानून है. यह समाप्त होने चाहिए.

किसानों की ऋण माफी भी बैंको को खोखला कर रही है. राजस्व पर भी भारी दबाव पड़ रहा है. वोट प्राप्त करने के लिए सरकार पहले कर्जा बॉटती है और कर्जा वसूल न होने की दशा में पुनः वोट के लालच में कर्जा माफ कर देती है. इसका लाभ केवल तथाकथित किसानों को मुख्य रुप से होता है. प्रत्येक पार्टी की सरकार किसानों के अपने पक्ष में करने के लिए कर्जे बॉटना और कर्जे माफ करने का नाटक दोहराती रहती है. जनता की गाढ़ी कमाई का पैसा कर्जो के बॉटने और माफ करने में चला

जाता है और जो किसान कर्जा लेते है. वह उस कर्जे की राशि से अपनी खेती को नहीं सुधारते बल्कि व्यक्तिगत सुविधाओं में, मनोरंजन में वह पैसा उड़ा देते है. ऋण केवल उसे ही दिया जाना चाहिए जो ऋण का सदुपयोग करे और ऋण को वापस कर दे. बैंको पर जो मुसीबत आयी और या आने वाली है वह कर्जे बॉटना और उनकी वसूली न होना मुख्य है.

सरकार कर व बिजली की चोरी रोकने में सफल नहीं हुई है. व्यापारिक संस्थान करोड़ो रुपये की चोरी कर रहे है. कभी छापा पड़ता है, पकड़े जाते है, जुर्माने होते हैं लेकिन बाद में पिछली हानि को भी पूरा करने के लिए चोरी की मात्रा बढ़ा दी जाती है. ऐसे कई व्यापारिक संस्थान है जिन पर अरबो रुपयें कर की देनदारी है किन्तु कभी सरकारी शिथिलता और कभी राजनीतिक प्रभाव के चलते कर वसूली नहीं होती. बिजली का तो इससे भी बुरा हाल है. कई मोहल्ले ऐसे हैं जिनमें खुले आम तारों पर कटवे डालकर बिजली की आपूर्ति होती है और विभागीय कर्मचारी ऐसे मोहल्लों में जाने से डरते है और यदि चले भी गये तो या तो वहां से पिटकर आते हैं अथवा कोई कार्यवाही चोरो के विरुद्ध करने में स्वयं को असमर्थ पाते है. यह सरकारी नीति का दुष्परिणाम है.

सांसदो, विधायको और बड़े-बड़े शिखरस्थ अधिकारियों पर टेलीफोन और बिजली के बिल की बकाया करोड़ो में है. जितना बड़ा सांसद उतनी ही बड़ी बकाया. देशभक्ति की इससे बड़ी मिसाल क्या होगी कि हम टेलीफोन और बिजली की बकाया भी नहीं देना चाहते. हम सांसद है. अतः यात्रा भी मुफ्त करेंगे, खाना भी मुफ्त खायेंगे और होटल में भी मुफ्त ठहरेंगे. हम देशभक्त है देश को हर प्रकार से चूसने का हमें अधिकार है. इन सांसदो, विधायको और अधिकारियों से टेलीफोन या बिजली का बिल वसूल करने का साहस प्रधानमंत्री में भी नही है क्योंकि उसे भी अपनी कुर्सी बचाने के लिए इनका समर्थन चाहिए.

विदेश यात्रायें किसी भी देश की आर्थिक स्थिति को खराब करने में सोने पे सुहागे का काम करती है. विदेश यात्राओं से कोई लाभ नहीं होता. केवल मंत्री और अधिकारी मौज मस्ती के लिए विदेश यात्राओं पर सरकारी खर्चे पर सपरिवार जाते है और साथ में अपने दोस्तों को भी ले जाते हैं. वहां से जो खरीदारी करके लाते है, उसका भुगतान भी सरकारी कोष से होता है. सुविधाशुल्क का भी बहुत बड़ा हाथ मंदी लाने में है. किसी एक अफसर, मंत्री, व्यापारी के घर की जांच की जाये तो करोड़ो रूपया हिसाब-किताब से बाहर आय से अधिक सम्पत्ति के रुप में मिल जायेंगे. जिन-जिन अधिकारियों के यहां और जिन-जिन मंत्रियों के यहां छापे पड़े है उनके यहां करोड़ो रुपयों की सम्पत्ति यहां पर और विदेशों में मिली है. यदि कोई कानून हो और स्वीस बैंको से जानकारी की जाये तो रिश्वत का पैसा अनायास ही हाथ आ सकता है. जो कल सड़क पर फटे हाल घूमते थे, सवारी के नाम पर जिनके पास साईकिल भी नहीं थी. वह एक बार सांसद या विधायक बनते ही करोड़पति हो जाते है. सुविधाशुल्क के नाम पर प्रत्येक विभाग देश को और जनता को चूना लगा रहा है. इससे तो अच्छा है की सुविधाशुल्क को कानूनी मान्यता प्रदान कर दी जाये.

बेरोजगारी भी एक प्रकार से आर्थिक मंदी के लिए जिम्मेदार है. बेरोजगार युवक रास्ते से भटक जाते है. रेलों में, सड़को पर, बैंको में खजाने में, रोज ही लूट की घटनाऐं होती है. करोड़ों रुपया इधर से उधर हो जाता है कुछ पकड़ जाता है, कुछ पकड़ने वाले खा जाते है. इससे महंगाई भी बढ़ती है और आर्थिक मंदी का दौर भी होवी होता है. हमारे दशे का अजीब हाल है. महिलाओं को नौकरी के लिए उकसाया जा रहा है. आरक्षण दिया जा रहा है और पढ़े लिखें योग्य युवक बेरोजगार घूम रहे है. इसका एक प्रभाव और होता है. बेरोजगार महिला विवाह नहीं करती और बेरोजगार युवक का विवाह नहीं होता है. फलस्वरुप समाज में भ्रष्टाचार पनपता है. ऐसी

■ किसानों की ऋण माफी भी बैंको को खोखला कर रही है. वोट के लिए सरकार पहले कर्जा बॉटती है और पुनः वोट के लालच में कर्जा माफ कर देती है. जिसका लाभ भी तथाकथित किसानों को ही मिलता है.

■ सरकार कर व बिजली की चोरी रोकने में सफल नहीं है. व्यापारिक संस्थान करोड़ो रुपये की चोरी कर रहे है. छापे पड़ते है, जुर्माने होते हैं और बाद में हानि को भी चोरी की मात्रा बढ़ाकर पूर्ति कर ली जाती है.

■ सांसदो, विधायको और बड़े-बड़े शिखरस्थ अधिकारियों पर टेलीफोन और बिजली के बिल की बकाया करोड़ो में है. जितना बड़ा सांसद उतनी ही बड़ी बकाया. देशभक्ति की इससे बड़ी मिसाल क्या होगी

महिलाएं स्वयं को सुरक्षित नहीं रख पाती. अखबारों में रोज बलात्कार की घटनाएं प्रकाशित होती है और बेरोजगार युवक रास्तें से भटक जाते हैं तथा आतंकवादी, उग्रवादी, नक्सली, डाकू, लुटेरे जैसे कार्यो में लिप्त हो जाते है. समाज सर्वनाश की ओर अग्रसर होता जाता है. पथ भ्रष्ट युवक और युवतियॉं समाज को भ्रष्टाचार के अलावा कुछ नहीं दे सकते. चरितहीनता समाज में व्याप्त हो जाती है. अवैधानिक रूप से कमाया गया धन महंगाई को भी बढ़ाता है और आर्थिक मंदी भी लाता है.

आर्थिक उथल पुथल के लिए क्रिकेट का खेल और क्रिकेटरों को दिये जाने वाला धन भी जिम्मेदार है. क्रिकेटर को एक साल में करोड़ो रुपये दे दिये जाते हैं. जिसका कोई लाभ देश को नहीं मिलता. व्यर्थ समय बरबाद करने का खेल है. ना तो आतंकवाद ही रूकता है और ना ही विश्व में इससे मैत्री प्रगाढ़ होती हैं. हर दिन, हर घंटे क्रिकेट खेलना और क्रिकेट के खिलाड़ियों को करोड़ों रुपये देना जिसमें बिचोलियों का भी हाथ होता है. किसी भी तरह देशहित में नही है, बल्कि इससे सरकारी कोष खोखला होता रहता है.

आर्थिक मंदी के इस दौर का उद्योगों का सरकारीकरण भी जिम्मेदार है. चीनी मिलें अधिग्रहित की गयी थी. जितने की मिल नहीं थी उससे अधिक रुपया उन मिलों में अब तक लग चुका है और मिलें अब भी चलने योग्य नहीं है तथा हर साल हानि दे रही हैं. जिस नेता का यह सुझाव था कि चीनी मिलों को अधिग्रहण कर लिया जाये उसके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हुई और सरकार का अरबों रुपयें का कोष चीनी मिलों को चलाने और रख रखाव में खर्च हो गया. यह मिलें यदि निजीकरण में चलती तो सरकार का अरबों रुपया बचता और आय कर, व्यापार कर,सेवा कर आदि अलग से मिलते. भ्रष्टाचार का दौर मिलों को खा गया और मिलें सरकार को खा गयी. मंदी तो आनी ही थी जब अंधाधुंध रुपया मिलों पर खर्च किया गया और ऐसा लगाया गया रुपया चन्द लोगों की जेबों में चला गया तो और क्या हो सकता था. सरकार खोखली होती गयी. मिलों से संबंधित व्यक्ति करोड़पति होते गए और यह करोड़ों रुपया निरर्थक और व्यर्थ तथा अनुपजाऊ होकर रह गया. बैंकों ने मिलों को कर्जा दिया बैंक दिवालिया हो गये और मंदी हावी होती गयी. हम खुद जिम्मेदार है इस आर्थिक मंदी के. कोई अंकुश ना किसी अधिकारी पर है, ना मंत्री पर है, ना सरकारी उद्योग धन्धों पर हैं. सरकारी खजाना और बैंक खाली होते जा रहे हैं. जनता पर राजकोष के हित में अंधाधुन्ध कर लगाये जा रहे हैं. जनता करों में पिस रही है. उद्योग सरकारीकरण में पिस रहे हैं. बैंक कर्जे बॉटते-बॉटते दिवालिया हो गये हैं. अगर आर्थिक मंदी नहीं होगी तो क्या होगा. देश का ईश्वर ही मालिक है क्योंकि जिस देश का राजा अपने ही कोष की चोरी करने लगे तथा अधिकारी और मंत्री भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाये उस देश का आर्थिक ढांचा एक दिन तो लड़खड़ाकर गिरेगा ही. प्रतीक्षा कीजिए. अब भी अगर सुध रेंगे और नहीं चेतेंगे तो बरबादी के अलावा कुछ हाथ नहीं आयेगा.

++++++++++++++

लोकप्रिय रहना चाहते है तो तकियाकलाम पर लगाएं लगाम

लंदन. बॉसेस, टीचर्स, पॉलिटिशियन सावधान! दूसरे के सामने मुंह खोलने से पहले जरा अपने शब्दकोष पर ध्यान दीजिए जनाब. जुबान से निकले चंद शब्द तारीफों के कसीदे बंधवाने के साथ पल भर में लोकप्रियता के पायदान से नीचे ढकेल सकते है. जी हां, बातचीत में शुमार आपका तकियाकलाम लोगों की झुंझलाहट का सबब बन सकता है.

यह आपको मजाक का पात्र या आलोचनाओं का शिकार बनाने में भी नहीं चूकेगा. नतीजन लोग आपकी बातों और विचारों को गंभीरतापूर्वक लेना ही छोड़ देंगे. ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के विद्वानों ने दुनिया के सबसे झेलाऊ शब्दों और मुहावरों की सूची जारी की है. शोधकर्ताओं का मानना है कि जिम्मेदार पद पर आसीन लोगों को इन शब्दों इस्तेमाल से खासा परहेज करना चाहिए. प्रमुख शोधकर्ता जर्मी बटरफील्ड के अनुसार किसी चीज की अति नुकसानदेह है. किसी किताब, फिल्म, जोक या जीवनशैली की तर्ज पर भाषा में लगातार चंद विशेष शब्दों या मुहावरों का इस्तेमाल भी पकाऊ होने लगता है. उन्होंने कहा हमेशा कुछ नया करने की जद्दोजहद में लगा इंसान ही लोकप्रियता के आंगन का स्थायी सदस्य बन सकता है. लोग उसके आचार-विचार, जीवनशैली और ज्ञान को अपनाने की कोशिश करते है. उन्होंने कहा कि आखिरकार सबसे बासी और उबाऊ शब्द है. इसे सुनने वाले इस कदर पक चुके होते हैं कि बेचारें बोलने वाले को बेवजह ही तीखी प्रतिक्रियाओं का सामना करना पड़ता है. वहीं अजीबोगरीब, मेरी राय में, देर आए दुरुस्त आए और पूरे सम्मान के साथ जैसे मुहावरें भी श्रोताओं की झुझलाहट में इलाफा करने की कोई कसर नहीं छोड़ते है.

+++

द्वन्द की समाप्ति है संकल्प की पूर्णता

–सीताराम गुप्ता,नई दिल्ली

- हमारे संकल्पों के पूरा न होने का कारण तो यही है कि हम अपने संकल्प के प्रति आश्वस्त ही नहीं होते.
- यदि आप चाहते हैं कि आपके संकल्प पूरे हों तो सबसे पहले यही संकल्प लीजिए कि मेरे सभी सकारात्मक संकल्प या विचार सदैव पूर्ण होते हैं।

नया साल आता है और चला जाता है। हर नये साल का हम उत्साहपूर्वक स्वागत करते हैं तथा नववर्ष की पूर्वसंध्या पर आगामी वर्ष को बेहतर बनाने के लिए नये-नये संकल्प लेते हैं। मेरे ये पूछने पर कि इस साल नये वर्ष के अवसर पर आप क्या नया संकल्प ले रहे हैं मेरे एक मित्र बोले कि मेरे संकल्प कभी पूरे नहीं होते अतः मैंने संकल्प लेना ही छोड़ दिया है। कमोबेश हम सब के साथ यही होता है। या तो हम संकल्प लेते ही नहीं और यदि ले भी लें तो वे पूरे नहीं हो पाते। क्या कारण है हमारे संकल्पों के अधूरा रह जाने का?

हमारे संकल्पों के पूरा न होने का एक कारण तो यही है कि हम अपने संकल्प के प्रति आश्वस्त ही नहीं होते अर्थात् हमें विश्वास ही नहीं होता कि हमारा संकल्प पूरा हो जाएगा। और इस प्रकार हम एक विरोधी संकल्प ले लेते हैं कि ''मेरे संकल्प कभी पूरे नहीं होते।'' यह भी एक संकल्प है लेकिन नकारात्मक और अनुपयोगी संकल्प। यदि आप चाहते हैं कि आपके संकल्प पूरे हों तो सबसे पहले यही संकल्प लीजिए कि मेरे सभी सकारात्मक संकल्प या विचार सदैव पूर्ण होते हैं। यहाँ एक बात और भी महत्वपूर्ण है और वो ये कि हम जाने-अनजाने हर क्षण नये-नये संकल्प लेते ही रहते हैं। हमारे मन में उठने वाला हर विचार एक संकल्प ही तो है। यदि हम अपने अंदर ये विश्वास पैदा कर लें कि हमारे सभी सकारात्मक विचार या संकल्प पूर्णता को प्राप्त होते हैं तो जीवन में एक क्रांति आ जाए। हमारे असंख्य उपयोगी विचार पूर्ण होकर हमारे जीवन और पूरे समाज को बदल डालें। अतः सबसे पहले अपने संकल्प की पूर्णता के प्रति अपने मन में पूर्ण विश्वास पैदा कीजिए।

अब आपको अपने संकल्पों के पूर्ण होने के विषय में कोई संदेह नहीं रहा और आप पूरे जोशो-ख़रोश के साथ कुछ महत्वपूर्ण संकल्प ले लेते हैं लेकिन फिर भी निराशा ही हाथ लगती है। आखिर क्यों? हम सबमें अच्छे संकल्प लेने की क्षमता है और हम उपयोगी संकल्प ले भी लेते हैं अथवा उपयोगी विचारों का चुनाव कर भी लेते हैं लेकिन क्या हम किसी संकल्प को लेने के बाद अथवा किसी उपयोगी विचार का चुनाव करने के बाद उसकी उपयोगिता के तत्त्वों को अक्षुण्ण रख पाते हैं? शायद नहीं। विचार ही तो है कमजोर पड़ जाते है। या तो संकल्प की उपयोगिता पर ही संदेह होने लगता है अथवा संकल्प के विरोधी विचार ही सिर उठाने लगते हैं और द्वन्द्व शुरू हो जाता है।

द्वन्द्व की स्थिति में हमारे संकल्प की भावना पर बार-बार प्रहार होता है और मूल संकल्प कब और किस रूप में प्रभावी होकर वास्तविकता ग्रहण करता है हमें पता ही नहीं लगता। जीवन में द्वन्द्व या शंका के कारण परस्पर विरोधी विचार उत्पन्न होते रहते हैं।

विचार वास्तविकता का मूल है। पहले एक विचार ने स्वरूप ग्रहण करना प्रारंभ किया ही था कि दूसरे विचार ने दूसरा स्वरूप ग्रहण करना प्रारंभ कर पहले विचार को विकृत अथवा नेस्तोनाबूद कर दिया। अब दूसरे विचार को तीसरे ने और तीसरे विचार को चौथे ने धाराशायी कर दिया। हर विचार हर इच्छा अथवा हर संकल्प के साथ यही क्रम जीवनभर चलता रहता है। हम जीवनभर अच्छा सोचते हैं, बार-बार शुभ संकल्प लेते हैं लेकिन द्वंद्व के कारण हमारी अच्छी भावना या विचार टिक ही नहीं पाते अर्थात् संकल्प वास्तविकता को प्राप्त नहीं हो पाते। इस प्रकार जीवन में विभिन्न इच्छाओं, संकल्पों अथवा लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए द्वन्द्व की समाप्ति अनिवार्य है। द्वन्द्व की समाप्ति ही मनोवांछित उपयोगी जीवन जीने की अनिवार्य शर्त है तथा जीवन जीने की कला भी है। यहाँ अपनी सोच में थोड़ा दिशांतरण करना होगा अर्थात् एक और सोच विकसित करनी होगी और वो ये कि कोई भी नकारात्मक या विरोधी सोच मेरी सकारात्मक विचार प्रक्रिया को प्रभावित नहीं करती। इसे इस प्रकार भी स्वीकार किया जा सकता है कि केवल सकारात्मक सोच ही मेरे जीवन को प्रभावित करती है। यानी द्वन्द्व से उत्पन्न नकारात्मक या विरोधी

सोच के विरूद्ध उसकी विरोधी एक अन्य सोच का विकास। यह एक एंटी वायरस डिवाइस की तरह काम करेगी। यह हमारे संकल्प अथवा उपयोगी मूल विचार को सुरक्षित रखने और उसे वास्तविकता में बदलने में सहायक एक विशुद्ध सकारात्मक विचार है।

जीवन में इच्छाओं का दमन करने की आवश्यकता नहीं है। इच्छाओं के अभाव में इस भौतिक शरीर का प्रयोजन ही क्या हो सकता है? जीवनोपयोगी, समाजोपयोगी इच्छाओं को उत्पन्न होने दीजिए और उन्हें वास्तविकता में परिवर्तित कीजिए लेकिन इसके लिए इच्छा के विरोधी भावों का त्याग भी अनिवार्य है। अब इच्छा के विरोधी भावों को मन में आने से कैसे रोका जाए?

हम डॉक्टर या न्यूट्रीशियन से परामर्श करके उचित आहार-विहार का चार्ट बनाकर उसका पालन करते हैं। ब्यूटी-पार्लर में जाकर चेहरे की तथा दूसरे अंगों की लिपाई-पुताई करा लेते हैं और स्थाई परिवर्तन वेफ लिए उपलब्ध है कॉस्मेटिकसर्जरी। कपड़ों के चुनाव और डिशायनिंग के लिए फैशन डिशायनर की सेवाएँ उपलब्ध हैं। शारीरिक सौष्ठव के लिए जिम हाजिर है। हर क्षेत्र में प्रशिक्षण की व्यवस्था सुलभ है। तो क्या विरोधी भावों के त्याग के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी संभव है? अवश्य संभव है। जीवन में यही एक ऐसा क्षेत्र है जिसके प्रशिक्षण की परमावष्यकता है लेकिन हम इसी क्षेत्रा की अध्किाध्कि उपेक्षा करते हैं। क्योंकि इस प्रषिक्षण में बाह्य उपकरणों की आवष्यकता नहीं होती अतः यह प्रषिक्षण ही नहीं लगता या दिखाई देता।

विचारों का उद्गम मन है अतः मन वेफ उचित प्रषिक्षण द्वारा न वेफवल उपयोगी विचारों का बीजारोपण संभव है अपितु साथ ही विचारों वेफ विरोधी भावों का बीजारोपण रोकना भी संभव है। इसवेफ लिए मन की साध्ना अनिवार्य हैं। मन की साध्ना अर्थात् मन को विकारों से मुक्त कर उसमें उपयोगी विचार या सुविचार डाल कर उस छवि को निरंतर दष्ढ़तर करते जाना। यही ध्यान अथवा मेडिटेषन है। पूरी उफर्जा को एक ही वेफन्द्र बिन्दु पर एकत्रा करना। ध्यान द्वारा अपेक्षित उपयोगी विचार, इच्छा अथवा संकल्प को कल्पनाचित्रा या चाक्षुशीकरण ;विशुवलाइशेषनद्ध द्वारा लगातार दष्ढ़तर करवेफ वास्तविकता में परिवर्तित करने की प्रव्रिफया में विरोधी भाव उत्पन्न होने का प्रष्न ही नहीं उठता। ध्यान अथवा मेडिटेषन की सैकड़ों विध्याँ मौजूद हैं। किसी भी विध् से अभ्यास करें लाभ होगा ही।

नववर्ष में आप अच्छे संकल्प लें और आपके संकल्प पूर्ण हों इसी कामना के साथ।

लेखक का नाम डालना है

समाज

सामाजिक संगठन एवं कार्यकर्ता

- सामाजिक संगठन जितना सुदृढ़ होगा उतना ही कार्य अच्छा होगा.
- सामाजिक संस्थाओं के पद सेवाभाव से कार्य के लिए होते है, लाभार्जन के लिए नहीं
- किंतु संस्था के पदाधिकारी/कार्यकर्ता कार्यो को लगन व उत्साह से नहीं करते
- यदि आपके पास समय नही है तो किसी संस्था में पदभार नहीं लेना चाहिए. केवल सम्मान या नाम प्रतिष्ठा के लिए किसी संस्था में पद ग्रहण करना किसी प्रकार से बुद्धिमता नही है.
- संस्था तभी सुचारू रूप से संचालित होगी जबकि उसके पाससमयबद्ध कार्यक्रम होगा, पर्याप्त अर्थ सुलभ होगा. समर्पित कार्यकर्त्ता होगे

किसी भी महत्वपूर्ण योजना को मूर्तरूप देकर साकार करना हो तो वह एक व्यक्ति द्वारा संभव नहीं हो सकता. यदि उसे संगठित होकर किया जाये तो वह योजना, कार्य शीघ्र व अच्छे तरीके से पूरा किया जा सकता है. इसके लिए ही सामाजिक संगठनों की आवश्यकता होती है. सामाजिक संगठन जितना सुदृढ़ होगा उतना ही कार्य अच्छा होगा. संस्था-संगठन का भवन या कोष सुदृढ़ हो इससे संगठन सुदृढ़ नहीं हो सकता. संगठन का प्राण व धन होते है, उसके पदाधिकारी उसके कार्यकर्त्ता यदि वे निष्ठावान है तथा उनका संचालन प्राणवान है तो संस्था प्रभावी व तेजस्वी हो सकती है. पदाधिकारी संस्था के हृदय होते हैं तो कार्यकर्ता संस्था की रीढ़ होती है. यदि संस्था के पास समर्पित, उद्यमी तथा सद्चरित कार्यकर्त्ता होंगे तो वह संस्था समाज का कल्याण व उत्थान कर सकती है.

पद सेवा के लिए होते है-सामाजिक संस्थाओं के पद सेवाभाव से कार्य करने के लिए होते है न कि किसी प्रकार के लाभार्जन के लिए. यदि कार्यकर्ता पूरी निष्ठा के साथ अपने पद के दायित्व को पूरा करते हैं तो वह संस्था शीघ्र ही अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर तेजस्वी बन जायेगी. कार्यकर्ता ही संस्था की छबि को निखार सकते है. किंतु संस्था के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता संस्था के कार्यो को लगन व उत्साह से नहीं करते तथा संस्था के कार्यो के लिए अपना समय व श्रम नहीं देते तो वह सस्था बेजान हो जाएगी और थोड़े समय में ही उसका कार्य बंद हो जायेगा. इसके कई उदाहरण है-अनेक कार्यकर्त्ताओं ने शुरू-शुरू में तो अपने नाम व पद के लिए अपनी अलग-अलग संस्थाएं बनाई किंतु वह संस्था के कार्यो के लिए अपना समय नहीं दे सके एवं अर्थ की व्यवस्था नहीं कर सके तो वह शीघ्र ही बंद हो गयी. इसलिए कार्यकर्त्ता यदि संस्था का निर्माण करते हैं तो उसके संचालन के लिए उन्हें समय भी अवश्य देना चाहिए. यदि आपके पास समय नही है तो आपको किसी संस्था में पदभार नहीं लेना चाहिए. संस्था का पदाधिकारी बनने का तात्पर्य यही है कि आप उसके कार्यक्रमों, योजनाओं तथा विकास में पूरी रूचि रखकर समय देंगें. केवल सम्मान या नाम प्रतिष्ठा के लिए किसी संस्था में पद ग्रहण करना किसी प्रकार से बुद्धिमता नही है. अब प्रश्न यह है कि संस्था को गतिशील रखने के लिए कार्यकर्त्ताओं की भूमिका क्या है?

संस्था का कार्य तभी सुचारू रूप से अच्छी तरह संचालित होगा जबकि उसके पास समयबद्ध कार्यक्रम होगा, पर्याप्त अर्थ सुलभ होगा. समुचित रूप से हिसाब रखा जायेगा. समर्पित कार्यकर्त्ता होगे तथा वह आपस में टीम वर्क से कार्य करेंगें. एक दूसरे के साथ तालमेल व समन्वय रखेंगे. संगठन का संचालन का कार्य भी अनेक रूप से किसी कंपनी की तरह ही संचालित होता है. प्रभावी एवं कुशल पदाधिकारी को संगठन को गतिशील बनाने के लिए कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए.

१.सर्वप्रथम तो यह देखना चाहिए कि एक गॉव या नगर में एक ही सामाजिक संस्था हो और सभी स्थानीय परिवारों को उसका सदस्य बनाया जावें.

२. संगठन के सदस्यों की संख्या के अनुसार उसके संचालन हेतु कार्य समिति या कार्यकारिणी का गठन करना चाहिए तथा कार्यकारिणी के सदस्यों की संख्या भी कुल सदस्यों की संस्या के अनुपात में निश्चित करना चाहिए. कार्यकारिणी के प्रत्येक पदाधिकारी के कर्तव्य व अधिकार संगठन का विधान बनाकर निश्चित करना चाहिए.

वार्षिक कार्यक्रम निर्धारणः

पदाधिकारियों का कर्तव्य है कि संगठन के वार्षिक कार्यक्रम तथा बजट का नियोजन करें. एक वर्ष के अंतर्गत होने वाले कार्यक्रम व आयोजनों का निर्धारण होने के पश्चात उसके लिए अर्थ की व्यवस्था कैसे होगी यह भी विवरण तैयार करना चाहिए.

कार्यक्रम का कार्यान्वयनः जो कार्यक्रम बनाए हैं उनको अच्छी तरह संपन्न करने की जिम्मेदारी प्रत्येक पदाधिकारी

कहानी

माधुरी

✍जे०एल०त्रिपाठी, सीधी, म०प्र०

माधुरी के पति कॉलेज में प्रोफेसर थे. वे एक अच्छे साहित्यकार तो थे ही आध्यात्म के भी अच्छे प्रेमी थे. रामायण, गीता, श्रीमद्भागवत व अन्य पौराणिक ग्रन्थों का स्वाध्याय एवं मनन उनके जीवन का उद्देश्य था.

बड़े-बड़े साहित्य सम्मेलनों में भाग लेना उनकी पहली पंसद थी, साथही सत्संग सुनना, महापुरुषों का प्रवचन सुनना, साहित्यिक व आध्यात्मिक सम्मेलनों का आयोजन कराना भी उनको उतना ही पंसद था जितना सम्मेलनों में भाग लेना. सहजता, सरलता, मृदुलता कर्तव्य निष्ठा एवं ईमानदारी ही उनकी प्रमुख पूंजी थी. यही कारण था कि वे हरदम अर्थाभाव से ग्रसित रहते. माधुरी के साथ वे काफी प्रसन्न रहते थे. वे हमेशा माधुरी को अपने साथ रखते.

माधुरी के कोई सन्तान न थी, फिर भी वे कभी भी सन्तान हीनता के कारण दुःखी नहीं दिखते बल्कि ईश्वर के विधान को सहज में ही स्वीकार कर लिये थे. उन्होंने कभी भी दूसरा विवाह करने को नहीं सोचा, बल्कि कई बार बुजुर्गों के द्वारा आए प्रस्ताव को ठुकरा दिया था. उनके बड़े भाई के दो पुत्र एवं दो पुत्रिया थी. छोटी पुत्री को वे अत्यधिक प्यार करते थे कारण वह जब दो तीन वर्ष की थी तभी से उनके पास रहने लगी थी. शेष तीन सन्तानों को भी वे अपनी ही सन्तान जैसे स्नेह देते थे. उनकी श्रीमती माधुरी भी उसी प्रकार से बच्चों को स्नेह करती जैसे उनके पति. उधर दोनों सगे भाई थे तो इधर दोनों सगी बहनें.

ऐसा नहीं था कि प्रोफेसर साहब ने संतान सुख हेतु चिकित्सीय सहारा न लिया हो लिया था, लेकिन केवल अपने स्तर तक ही. उच्चस्तरीय सहारा जैसे टेस्ट ट्यूब बेबी या अन्य तकनीक अर्थाभाव के कारण वे नहीं करा सके थे. यद्यपि उनके बड़े भाई साहब भी शासकीय सेवा में थे. उनके पिता जी भी शासकीय सेवा में थे लेकिन जबसे वे स्वयं सर्विस में आए कभी किसी से एक रुपया आर्थिक सहारा नहीं लिए, जो वन पड़ा देते ही गयें.

वे घर के प्रत्येक कार्यो में पूरे मनोयोग से सहयोग करते बल्कि अपनी क्षमता से अधिक ही सहयोग करते, माधुरी भी अपने पति प्रोफेसर साहब के साथ उनकी इच्छानुसार ही चलती किन्तु एक स्त्री होने के नाते अपनी सन्तान की कमी हमेशा खटकती रहती. कभी इसी बात को लेकर दोनो के बीच तनाव भी पैदा हो जाता, जब माधुरी उन्हें कोसती कि आपने ये नहीं किया तो वो नहीं किया, नहीं तो क्या हम ऐसे ही रह जाते. प्रोफेसर साहब चुपचाप सहन कर बात को टाल जाते. यद्यपि माधुरी ने भले ही अपने उदर से किसी संतान को जन्म नही दिया था लेकिन मातृत्व सुख से कभी वंचित नहीं रही. उनकी बड़ी बहन की छोटी बच्ची हमेशा उन्ही के पास पुत्री के समान रही, उसकी शिक्षा दीक्षा शादी विवाह सब कुछ उन्हीं के द्वारा सम्पन्न हुआ. बड़े भतीजे का भी लालन पालन पूरी शिक्षा दीक्षा उन्हीं के द्वारा सम्पन्न हुआ. छोटे भतीजे की उच्च्य शिक्षा उन्होंने ही पूरी करवाई. जब वे सभी बच्चे बड़े हो गए तब बड़ी भतीजी को पुत्र अर्थात नाती को उनके पास रख दिया गया, वे उसका लालन पालन करने लगी पढ़ाई, लिखाई शिक्षा दीक्षा कराने लगी. तथापि गोद सूनी होने का दुःख भी निरंतर झलकता रहता. माधुरी ने सन्तान हीन होने के बावजूद सन्तानों की जिम्मेदारी से कभी निजात नहीं पाया. जिस प्रकार चार बच्चों की मॉ को अपनी सन्तान की जिम्मेदारी बनी रहती उसी प्रकार उनको भी थे वे, शादी विवाह सब कुछ उन्हीं के द्वारा सम्पन्न हुआ, बड़े भतीजे का लाल यशोदा के समान निश्छल भाव से सभी बच्चों का लालन पालन शिक्षा दीक्षा कराती एवं मॉ के समान संस्कार देती एवं जब बड़े हो जाते तो अपनी बहन को सैाप देती.

माधुरी को उस समय गहरा आघात लगता जब कभी प्रोफेसर साहब के बड़े भाई अर्थात उनके जेठ एवं बड़ी बहन अर्थात जेठानी बच्चों को अपनाने लगती अर्थात अपनाने का भाव प्रर्दशित करती अथवा बच्चों के द्वारा अपनी मॉ को अधिक महत्व देते दिखती तब वे तिलमिला उठती और गुस्सा प्रो० साहब पर उतारती. स्वाभाविक था वे हमेशा बच्चों के द्वारा मॉ के जैसा ही प्यार की अपेक्षा किया करती.

माधुरी ने बड़े कष्ट से बहन के दोनो पुत्रों को पढ़ाया था. बड़ी से बड़ी परेशानी को भी भुलाकर उन दोनों को उच्च्य शिक्षा दिलाया था किन्तु उसके बदले उन्हें कुछ नहीं मिला था. वे तब और तिलमिला उठती जब उनकी बहन पड़ोसियों से उनकी ही निन्दा करने लगती. जेठ जी ने भी कभी भी एहसान नहीं माना बल्कि वे भी यही कहते कि यह सब मैंने किया है. सारा गॉव जानता था कि इतनी ऊँची शिक्षा का भार वे उठा ही नहीं सकते थे, अगर प्रोफेसर साहब का सहारा न होता, किन्तु फिर भी वे डींग मारने से नहीं थकते. कभी भी उन्होंने अपने मुखसे माधुरी अथवा प्रोफेसर की तारीफ तक नहीं किए बल्कि वे यही समझते थे कि उनकी गरज है. वे अक्सर कहा करते कि मैं बड़ा भाग्यशाली हूँ मुझसे बढ़कर भाग्यशाली कोई नहीं है. यही बात कई बारा उन्होंने प्रोफेसर के सामने भी कहीं तब प्रोफेसर साहब

उन्हें समझाते, देखो यह सब ईश्वर की माया है. कभी भी इंसान को सन्तान की घमण्ड नहीं करना चाहिये. संसार में केवल आप ही भर के पुत्र नही है, सारा संसार पुत्रवान है, सभी अपने संतान से प्रेम करता है, उन्हें प्राणों से अधिक चाहता है लेकिन आपके समान कोई ढिढोरा नहीं पीटता है.

जब कभी माधुरी पुत्र न होने के दुख से दुखी होती तब प्रोफेसर साहब उन्हें अपने ही परिवार के पुत्र वालों का उदाहरणा देकर समझाते, कहते देखों ईश्वर ने हमारे तुम्हारे ऊपर बड़ा उपकार किया है जो निःसंतान बनाया. कभी कोई यह तो नहीं कहेगा कि प्रोफेसर साहब का पुत्र नालायक है, चोर है, शराबी है, जुआड़ी है, अबारा है,लम्पट है, डकैत है,आदि क्योंकि आज कल केवल इसी प्रकार की सन्ताने निकल रही है. ऐसी सन्तान से तो अच्छा है कि निःसंतान होना.

प्रोफेसर साहब के परिवार में चार लड़के ऐसे थे जिनके कारण उनके मॉ बाप रात दिन रोया करते. पहला-नम्बर एक का शराबी था, नित्य प्रति मॉ बाप को प्रताड़ित करता एवं शराब के लिए जबरदस्ती, पैसे की मॉग करता जिससे तंग आकर उसकी मॉ ने आत्महत्या कर लिया था एवं पिताजी चिन्ता के मारे बीमार रहने लगे थे. दूसरा नम्बर का एक का अवारा, लोफड़,लफंगा, जुआड़ी था. जिसके कारण उसके मॉ बाप को हार्ट अटैक हुआ था और वे उस समय ही संसार छोड़कर विदा हो गये थे. तीसरा नंबर एक का चोर था जिसके कारण आये दिन उसे जेल की हवा खानी पड़ती थी. एवं चौथा ऐसाथा कि बाप कमाये लड़का उड़ाये, सर्वे कुलक्षण वाणी पूछ इस प्रकार इनका उदाहरण देकर समझाते रहते. प्रोफेसर साहब कहते कि तुम तो यशोदा से भी महान हो.

यशोदा ने केवल कृष्ण को पालपोश कर देवकी को सौपा था, तुम तो चार चार सन्तानों को पाल पोश कर बड़ा की हो. तुम धन्य हो, संसार में तुम्हारी गणना, श्रेष्ठ स्त्रियों में की जायेगी. रहा सहारे की बात तो यह ईश्वर के ऊपर छोड़ दो. उसी पर विश्वास रखों क्योंकि वास्तव में असली सहारा वही है. जिस पर ईश्वर की कृपा होती है, गुरुओं की कृपा होती है, ब्राम्हणों की कृपा होती है, उसी पर सन्तान की कृपा होती है. अतः तुम केवल कर्म करती रहो बस.

प्रोफेसर साहब ने दोनों बच्चो को अच्छा संस्कार दिया था अच्छी शिक्षा दी थी, दोनों अपने पैर खड़े हो गये थे. दोनो दामाद भी अपने पैरो पर खड़े थे. उन्हें आर्थिक सहायता की कभी किसी से आवश्यकता नहीं पड़ी थी. सेवानिवृत्त के बाद वे तीर्थाटन करते, एवं भगवान की शरण लेकर भगवान का भजन करते. दोनों बच्चे उनका आदर करते, सम्मान करते, दोनों दामाद भी पिता समान आदर सम्मान करते. और वे अपनी भजन में ही मस्त रहते.

माधुरी अपने पति के साथ ही रहती और उनकी साधना से सहायता करती. कभी कभी जब घर के काम से काफी थक जाती तो झल्ला कर कहती, क्या आप जैसा और कोई होगा. एक पैसे का काम नहीं कर सकते, कभी एक गिलास पानी लेकर नहीं पी सकते, जब देखो रात दिन लिखना पढ़ना, मैं तो तंग आ गई, इस लिखना पढना से, पैसे की बर्बादी सो अलग से. एक दिन माधुरी काफी प्रसन्न दिख रही थी. मैने पूछा भाभी आज आप काफी प्रसन्न दिख रही है, क्या बात है. प्रोफेसर साहब ने चुटकी ली. आया होगा किसी लड़के का फोन या कि गुड़िया (छोटी भतीजी जिसे उन्होंने बचपन से पाला था) का! क्यों? किसका फोन था.

माधुरी ने हॅसते हुए कहा-आज पहले बड़े दामाद का फोन आया, फिर छोटे दामाद एवं गुड़िया का फोन आया, थोड़ी देर बाद पप्पू का फोन आया फिर बबलू छोटे भतीजे का फोन आया! सभी कुशल से तो है, प्रोफेसर साहब ने कहा! हॉ सब ठीक है..

प्रोफेसर साहब ने चुटकी ली-इसीलिये तुम भी ठीक लगती हो, ऐसा लगता है जैसे सूखी रेत में कोई कमल खिला हो. अब उठाओ फोन, बहन से भी बात कर लो.

जब आप दिन भर यहॉ-वहॉ फालतू फोन करते रहते हैं तब, जब देखों हलो. सरस जी, हलो नीरस जी,कैसे है आप तब! बच्चों के पास कभी फोन नहीं करते, यही तो कह रहे थे आज. मैने माधुरी का बच्चो के प्रति प्रेम देखकर उसे धन्य माना था! जिसने अपना तन मन धन सब कुछ लुटा दिया था बहन के बच्चो पर.

प्रोफेसर साहब सिद्ध हस्त कवि थे. उनके कई काव्य संकलन प्रकाशित थे. कई कहानी संग्रह भी प्रकाशित थे. आध्यात्मिक ग्रन्थ उनके काफी लोकप्रिय हो रहे थे. सारा गांव उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखता था, उनकी भजन माला गा गाकर लोग आनन्द से झूम उठते. उनकी कहॉनिया पढ़कर लोग आनन्दानुभूति करते. वे प्रायः साहित्यिक सम्मेलनों धर्म सम्मेलनों एवं आध्यात्मिक गतिविधियों में ही लगे रहते. उन्हें कई बार कई सम्मान प्राप्त हो चुके थे. लेकिन इन सभी सम्मानों के प्राप्त हो जाने के बाद भी वे सज्जनता की प्रतिमूर्ति थे. उनके कितने ही आलोचक उनकी सज्जनता से हारकर उनके प्रशंसक हो गये थे कितने ही शिष्य हों गये थे अभिमान को कभी उन्होनें अपने पास नहीं आने दिया था जब लोग उनसे उनकी कविता के बारे में उनकी प्रशंसा करते तो वे यही कहते-सचमुच मैं नहीं कोई कवि, ना कोई

शास्त्र ज्ञाता हूँ।
बस यूं ही कभी कभी कुछ अनजाने लिख जाता हूँ.

उन्हें अपने कवि होने का कभी अहंकार नहीं रहा वे एक सच्चे साधु सेवी सन्त थे. यही उनकी विशेषता थी उन्होंने अपने जीवन में केवल सेवा की थी कराया नहीं था. वे अपने बड़े भाई को साहब को पिता के समान सम्मान देते थे. भाभी को मॉ समान मानते थे. माता-पिता की सेवा ही भगवान की सेवा है पूजा है अराधना है यही उनका मानना था. उनका मानना था कि व्यक्ति अगर अहंकार से रहित हो, कामक्रोध,लोभ, मोह से, रहित हो, गौ ब्राम्हण,साधु सन्त की सेवा में लगा हो तो फिर उसे अलग से घंटी बजाने की आवश्यकता नही हैं. ईश्वर की यही तो सेवा है. इसी में ईश्वर प्रसन्न रहता है.

नव वर्ष २००९ मंगलमय हो!

नववर्ष मंगलमय हो,
नववर्ष मंगलमय हो।
पूर्ण हो चिर चाह अधूरी।
घर-ऑगन गमके कस्तूरी।।
धन-धान्य,सम्पूर्ण जीवन मधुमय हो।
नववर्ष मंगलमय हो,
नववर्ष मंगलमय हो।
बरबस बरसे सुख-मेघ निरन्तर।
पायें स्नेह सौहार्द परस्तर।।
स्वस्थ, प्रसन्नचित चिरायु जीवन सुखमय हो।
नववर्ष मंगलमय हो,
नववर्ष मंगलमय हो।
काल-कुदृष्टि पड़े कभी ना।
मगन रहें गुरू-ईश अधीना।
श्रम-कण सिक्त जीवन गतिमय हो।
नववर्ष मंगलमय हो,
नववर्ष मंगलमय हो।

डी.पी.उपाध्याय 'मगन मनीजी', इलाहाबाद

++++++++++++++++++++++++++++++

नववर्ष मंगलमय हो,
नववर्ष मंगलमय हो।
तुम्हें नयी नयी खुशियॉ मिलें।
खुशियों के फूल खिलें।।
वो पथ बन जाये सुगम।
जो पथ कंटकमय हो।।
नववर्ष मंगलमय हो,
नववर्ष मंगलमय हो।
तुम जाओ जहॉ भी कहीं।
खुशियॉ बरसाओं वहीं।।
निर्भय हो काम करो।
नहीं कोई भी भय हो।।
नववर्ष मंगलमय हो,
नववर्ष मंगलमय हो।
तुम गाते रहो प्रेमगीत।
बन सब के हिय के नीत।।
कुछ नये शब्द तुम दो।
और कोई नयी लय दो।।
नववर्ष मंगलमय हो,
नववर्ष मंगलमय हो।

डॉ० अनिल शर्मा 'अनिल', बिजनौर, उ०प्र०

++++++++++++++++++++++++++++++++

......और इस वर्ष
आपका वह वर्ष यानि २००८
प्रसन्नता, सुख और शान्ति के साथ
गुजरा हो तो, बधाई।
आपका यह वर्ष यानि २००९
प्रसन्नता, सुख और शान्ति के साथ
गुजरने के लिए, शुभकामना।
......और आपके पास
जरा सा समय हो तो
इस 'बधाई' तथा 'शुभकामना' का
'प्राप्ति स्वीकार' भेज कर
'कृतार्थ' करें मुझे।

....और आप मानें या न मानें,
आपके ये दो शब्द
अनन्दित करेंगे मुझे पूरे वर्ष।
...और यदि मेरी यह 'अपेक्षा'
अनुचित, असामान्य या अस्वाभाविक लगे
तो तत्काल क्षमा कर
सूचित करने की कृपा करें

संतोष खरे, सतना, म.प्र.

++++++++++++++++++++++++++++++++

ज़िन्दगी को ज़िन्दगी के पास होना चाहिए।
हर सफर में हर घड़ी उल्लास होना चाहिए।
राह में कॉटे कभी तो फूल भी मिल जायेंगें।
ज़िन्दगी में यह सदा विश्वास होना चाहिए।
हर तरफ बहता लहू है मज़हबों के नाम पर,
आपसी सौहार्द का मधुमास होना चाहिए।
हम सभी दुश्मन बने हैं आज अपने ही लिए,
दोस्ती का दिल में कुछ आभास होना चाहिए।
ज़िन्दगी तब ज़िन्दगी के पास आएगी 'अखिल'
हर किसी के दर्द का अहसास होना चाहिए।

अखिलेश निगम'अखिल',अपर पुलिस अधीक्षक, लखनऊ

नव वर्ष २००९ मंगलमय हो!

मंगलमय नव-वर्ष

आप हों महान, मिले धन, यश और ज्ञान,
भाग्य-सूर्य का सदैव स्वर्णिम सवेरा हो।
भय, दुःख होवे दूर, अहंकार चूर-चूर,
रोग, शोक, मोह का विनष्ट ये अँधिरा हो।
सुख-शान्ति हो अपार, हर्ष का हो पारावार,
ईश्वर-कृपा का सदा जीवन में डेरा हो।
वन्दना है ईश से खिले प्रसून मानस में,
ऋतुराज का 'अखिल' बार-बार फेरा हो.
दीपक बनकर तुम जलो, मत हो यूँ बेहाल।
ज्योति छुएगी व्योम को, बनकर एक मशाल

अखिलेश निगम 'अखिल' , अपर पुलिस अधीक्षक,
पीआरओ, डीजीपी, लखनऊ

कहानी

हिमालय की गुड्डन

✍ सी.एल.दीवाना 'हिन्दुस्तानी', रीवा, म.प्र.

ये एक ऐसे हरे भरे पर्वतवादी घनघोर जंगलों के बीचों बीच से निकलने वाली हिमालय की गंगा की दास्तान है. जो कभी हिमालय की गंगा के नाम से प्रसिद्ध थी और आज भी अपनी प्रसिद्धि के कारण कायम हैं. वो काव्य संग्रह आपके हाथों में है. आजकल कलयुग के महान लालों ने मुझ पर ही कूड़ा करकट के अलावा मलमूत्र भी डालने लगे हैं. जिसके कारण में अब भद्दी-भद्दी गंदी बदबूदार अकिंचित नजर आती है.

एक दिन बसुंधरा भी मुझसे अपना दुखड़ा रो रोकर बयान कर रही थी. दीदी अब मेरे चिरंजीव पुत्रों एवं पुत्रियों ने भी हद पार कर दी हैं.

मेरी ही छाती को चीरकर उतार चढ़ाव करके फरेब, जुआ, सट्टा, छेड़छाड़, चोरी, डकैती, लूटपाट, राहजनी, हत्या, बलात्कार, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी अब सेवा शुल्क के रुप में लिया जाता हैं. बात-बात में झूठ बोलना आम आदमी का एक फैशन हो गया है. टीटी मेरी ही गोद में बैठकर, बाल मजदूरी, मजदूरों का शोषण, भ्रूण हत्या फिर अब यौवन शोषण भी करने लगे हैं. मुझे मेरे लालों ने घनघोर जंगलों को अपने निज सुख के लिए पेड़-पौधे कटवा कर उसको शहरी सौन्दर्यीकरण का जामा पहनाना शुरु कर दिया है. जिससे अब सही मात्रा में कहीं भी वर्षा नहीं हो रही है, जिसके कारण विगत कई वर्षो से देश में सूखा पड़ता रहता है. फिर मेरे लालों ने मुझे हर जगहों पर छेद कर कर के मुझे फकीरी वाला चोला पहना दिया है.

अब मैं जिन्दा कौम में पैर लटकायें बिस्तर में पड़ी रहती हूँ. अब मैं नीर की जगह रक्तों की उल्टियॉ करती रहती हूँ. मेरे लालों को मुझ पृथ्वी मॉ पर तरस नहीं आ रहा है. फिर भी हम बोलते हुए मूक बधिर सा बने रहते है.

इसका मतलब यह नही हुआकि हम कुछ जानते नही है. बच्चों हम जानते हैं और सब देख सुनकर चुप रहते है. इसका मतलब यह नहीं कि तुम मनमानी करते रहो. मैं चुपचाप सुनती व देखती रहूँ. अब ये हरगिज नहीं हो सकता है. बस अब बंद करो अपनी अपनी हरकतों को अब हद से पानी गुजर चुका है. बच्चों अभी वक्त है अपने आपको सुधारों इसी में सारे आलम की भलाई है.

अब मैं प्रकृति भी मानव का रुप बना पृथ्वी लोक में प्रवेश कर चुकी है क्योंकि आजकल मॉ-बहन, बेटी, बहू, भयाहू, मौसी, भतीजी, चाचा बुआ, भाभी के रिश्तों को भी कलंकित करके एक नई पहचान बनाकर साबित कर दिया है.

ये परिवार समाज के लिये बच्चों अच्छी बात नही हैं. नारी देवी का दूसरा रुप होती है, सदा उसका मान-सम्मान करना पड़ता है. क्योंकि इस समय मैं होश में नहीं आक्रोश में हूँ क्योंकि मैं ही बेमौसम बरसात, ठंडी और गर्मी हूँ. भूकम्प, ज्वालामुखी, गगन में बादलों का फटना, महामारी, समुन्दर में उतार-चढ़ाव के हाथ लहरों से कहर ढाना, ऑधी तूफान सा बयार हूँ. अन्य कहरों की मैं ही सरदार हूँ. भारतदेश के लालो-बूढ़ों, बच्चे और नवजवानों और नारियों असत्य का मार्ग छोड़कर सत्य का मार्ग पकड़ कर चलो जनकल्याण, लोकहित, राष्ट्रहित, धार्मिक व सामाजिक कार्यो में बढ़-चढ़कर भागीदारी निभाना होगा, जिसके लिए आप लोगों को जप, तप, यज्ञ, त्याग, तपस्या भी करना पड़ सकता है.

जहॉ नर और नारायण की पूजा हो माता-पिता और गुरुजनों को उचित मान-सम्मान करना पड़ता है. तभी देशों में अमन, चैन, भाईचारा, देशप्रेम, एकता, अखंडता आ सकती है. इसी में विश्व का कल्याण होगा.

वक्त की आवाज

धर्म है सौहार्द ही यह जानने का वक्त है।
धर्म के इस मर्म को पहिचानने का वक्त है।।
संत-संस्कृति का सदा भ्रातृत्व का सम्मान हो।
देशवासी एक हम यह मानने का वक्त है।

ऑधियां

ऑधियां आतंक की अब नहीं चलना चाहिये।
ऑधियों के रास्तों को राह न मिलना चाहिए।।
शान्ति समरसता समूचे राष्ट्र का आधार है।
हिन्द के सौहार्द्र की छवि नहिं बदलना चाहिये।

लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर', छतरपुर, म.प्र.

बहुमुखी व्यक्तित्व की धनी: श्रीमती सपना गोस्वामी

व्यक्तित्व

✍जया 'गोकुल'

८ अगस्त १९६७ को श्री राजकिशोर भारती के घर में जन्मी, माता श्रीमती सोना भारती के मातृत्व को आहलादित करने वाली, भारत स्काउट गाइड में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त श्रीमती सपना गोस्वामी बचपन से ही होनहार व बहुमुखी प्रतिभा की धनी रही है. प्राथमिक शिक्षा से लेकर इंटर तक की शिक्षा राधा रमण इंटर कॉलेज, नैनी से प्राप्त कर ई.सी.सी. कॉलेज, इलाहाबाद से १९८९ में स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की. उसके बाद १९९४ में कानपुर विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय से परास्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की. १९९९ में सम्पूर्णानंद विश्वविद्यालय से बी.एड. की परीक्षा उत्तीर्ण की.

सपना गोस्वामी अपने शैक्षणिक योग्यता के साथ ही साथ अन्य गतिविधियों में भी बाल्यावस्था से ही शरीक होती रही. १९७७ से १९८३ तक लगातार राधा रमण इंटर कॉलेज के वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाती रही. १९८१-८२ में स्काउट गाइड में ध्रुव पद प्राप्त किया. १२वीं कक्षा में अध यन के दौरान १९८४ में विचित्र वेशभूषा प्रतियोगिता, सलाद प्रतियोगिता तथा रिलेरेस में प्रथम स्थान प्राप्त

किया तथा विवग्योर, वार्षिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में विजयी रही. इसी वर्ष स्काउट गाइड में राष्ट्रपति अवार्ड प्राप्त की. ई.सी.सी. के वार्षिक समारोह के २०० मी. रिले महिला दौड़ में द्वितीय, भाला फेंक में प्रथम, डिसकस थ्रो में द्वितीय, १०० मी. ओमेन द्वितीय स्थान प्राप्त किया. होम नर्सिग कोर्स भी उत्तीर्ण किया तथा वोमेन्स कोचिंग, इलाहाबाद द्वारा आइसक्रीम, स्नैक्स, स्प्रे पेन्टिंग की भी ट्रेनिंग ली.

शैक्षणिक कक्षाओं में हमेशा अब्बल रहने वाली सपना गोस्वामी प्राथमिक से लेकर परास्नातक तक अच्छी छात्राओं में सुमार होती रही, कई बार विशेषांक भी मिले. १९९१ में गुरुनानक पब्लिक स्कूल नैनी में अध्यापन कार्य से अपना व्यावसायिक जीवन प्रारम्भ किया तथा १९९५ में निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय, नैनी में सहायक अध्यापक बनी. १९९६ में इसी विद्यालय में प्रध ।नाचार्या का पद ग्रहण किया तब से लेकर अभी तक इस पद पर ही बनी हुई है. १९९८ में बी.एड. प्रशिक्षण के दौरान विशेष प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया. तीन बहनों में सबसे बड़ी सपना गोस्वामी का विवाह जनवरी १९८८ में बुलंद शहर के श्री मोहित गोस्वामी के साथ हुआ. प्रखर व्यक्तित्व के धनी श्री मोहित गोस्वामी अपने आपमें एक मिसाल व्यक्तित्व के स्वामी है. वर्तमान शिक्षा पद्धति के बारे में उनका कहना है शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है. शिक्षक अपने कर्तव्य को भूलकर पैसा कमाना अपना कर्तव्य समझते है. आज केवल पैसा कमाने के लिए परचून की दुकान की तरह खुल रहे है. शिक्षण के क्षेत्र में एक अदभूत मिसाल कायम करने वाली श्रीमती सपना गोस्वामी अपने विद्यालय में अभिभावकों के साथ ही साथ बच्चों व शिक्षिकाओं को भी भरपूर सहयोग देती है. उनकी समस्याओं को स्वयं की समस्या मानकर उनका समाधान करने के लिए हर समय तत्पर रहती है. अगर यह कहा जाए कि वह एक आदर्श प्रधानाचार्या है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी.

त्रिपदिक छन्द

१. विद्या धन अनमोल
बड़े-बड़े ऋषि-मुनि यहाँ,
गए बोलकर बोल।।
२. सत्य-अहिंसा-न्याय।
बदले हुए समाज में,
लगते हैं असहाय।
३. हो कैसे अनुराग
वाणी जिसकी रात-दिन,
उगल रही है आग।।
४. जिसका जैसा भाव
बन जाता है एक दिन,
उसका वही स्वभाव।।
५.दुखमय सारा गाँव।
तोड़ दिए किसने यहाँ,
मानवता के पाँव।।
६. अच्छी लगती धूप।
आती है जब द्वार पर,
मौसम के अनुरुप।।
७. है वह व्यक्ति महान।
देख रहा संसार में,
सबको एक समान।।
८. कहिए आप जरुर।
फूल आजकल हो रहे,
क्यों खूश्बू से दूर?
९. टूट गया विश्वास
जाने किसने दे दिया,
श्रद्धा को वनवास।
१०. उत्तम उनका दर्श
जो भी रखते हैं यहाँ
जीवन में आदर्श।।
११. जाने किसका कोप।
धीरे-धीरे हो रहा,
नैतिकता का लोप।।

ओङ्म शरण आर्य, अलमोड़ा, उत्त०

स्नेह बाल मंच

माँ

उँगली पकड़कर चलाती है
माँ
जीवन में बड़ा बनाती है माँ
ममता का सागर है माँ
अनमोल प्रेम की गागर है
माँ

दुखों के सागर से बचाती है माँ
सुखों का अमृत पिलाती है माँ
विपदाओं में तारणहार है माँ
हम सबकी पालनहार है माँ

माँ की महिमा बड़ी निराली है
माँ ही बच्चों की रखवाली है
माँ से ही बच्चों की शान है
माँ इसीलिए सदा महान है।

माँ के जैसा नहीं है कोई दूजा
माँ की संसार करता है पूजा
माँ में कितनी मिठास है
माँ के हृदय सभी का वास है

माँ की महिमा बड़ी निराली है
माँ पिलाती सबको अमृतप्याली है।
कमल किशोर शर्मा, वर्धा, महाराष्ट्र

कविताएं

त्रिजटा तुम्हें प्रणाम

त्रिजटा नाम माता एका
राक्षस कुल की भले हो
पर गुणों से राक्षस बिलकुल नहीं
बल्कि आम स्त्रियों से भी श्रेष्ठ
जिसे एक बंधन में पड़ी स्त्री से
हमदर्दी है जो उसीस के राजा की कैद में है।
मानव स्त्रियॉ तो आपस में एक-दूसरे
से द्वेष-ईर्ष्या रखती है।
रिश्तों में भी चाहे वो ननद भौजी हो
या सास बहू या.....
लेकिन त्रिजटा ना सीता के रुप से जली
न दूसरे कुल, धर्म, जाति, संस्कृति की
स्त्री से उसने किसी प्रकार का बैर रखा।
दुख में, त्रिजटा ने एक स्त्री का दायित्व निभाना
एक कैदी स्त्री को स्नेह दिया
बल्कि यहॉ तक कि उसके बस में होता
तो वह सीता को वहॉ से मुक्त कर देती।
भले ही उसकी जान चली जाये।
अपने प्राणों की बलि देकर सीता को पुत्री मानकर
उसे सतत् दूसरी राक्षसियों से न केवल बचाया
बिल्क उसका हर तरह से ध्यान रखा।
अशोक वृक्ष के नीचे बैठी विलाप करती सीता
का शोक अशोक से नहीं, त्रिजटा ने दूर किया.
त्रिजटा जैसी स्त्रियों की आज आवश्यकता है
एक स्त्री दूसरी स्त्री के लिए त्रिजटा बने
तो पुरुष का वर्चस्व कम हो और नारी मुक्ति
आन्दोलन की आवश्यकता ही न पड़े
हे सीते तुम्हारा संताप तो त्रिजटा ने
अपने प्रेम से हर लिया।
हे त्रिजटा तुम मात्र स्त्री नहीं
राक्षसी तो बिल्कुल नहीं
तुम केवल माता हो पूज्या हो
तुम्हें प्रणाम।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा,

छिन्दवाड़ा, म.प्र.

यह भारत देश है मेरा

सूरज की किरणें पहली गिरता है
हिन्दूस्तान पर सब पवित्र बन जाता है मिट्टी
बहती है गंगा यमुना जैसी नदिया
चंदन पीपल नीम जैसे प्राणवायु देते है पेड़
यह भारत देश है मेरा।
बेलूर की शिल्पकला अजंता की गुफा
रेशम की साड़ी, संभार पदार्थ ले जाते है
राय नेहरु, गौतम जैसे शक्तिवान है
देवालय, में सर्वस्व न्योछावर है
यह भारत देश है मेरा
कवियों की पूण्यभूमी है
सब नतमस्तक है इसमें
सबसे प्यारा सबसे सुदंर
कलाम जैसे प्रसिद्ध विज्ञानी है
यह भारत देश है मेरा

जे.वी.नागरत्लमा, कर्नाटक

++++++++++++++++++++++++++++++++++

बाबुल कैसा उपहार दिया

गूंज रही कानों में सदा, चुपचाप वो हमसे जुदा हुए
चंद घंटे ही गुजरे हें, दुनिया से उनको विदा हुए।
आकाश में तारा बन जाएँगें, नया शरीर मिल जाएगा
आवागमन के चक्र से मुक्ति, शायद मोक्ष मिल जाएगा।
देह की व्याधियों से लड़ते, मन से कैसे हार गए।
बीच राह में हमें छोड़कर, खुद को कैसे तार गए।
मीत को रोता छोड़ गए, जीवन के रुख को मोड़ गए
शायद हमसे रुठ गये, तभी अकेला छोड़ गए।
हम सब कितना टूट गए, हमसे ऐसे छूट गए
संबंधो का तार जो छिटका, बांध बनाए टूट गये।
छत से सिर से सरकी जाए, अंधड़ में छतरी उड़ती जाए।
कैसे गम को सह पॉए, अंसुवन की गगरी छलकी जाए।
हाथ धरेगा सिर पर कौन, कौन राह दिखाएगा।
भूखे कुत्तों को रोज सबेरे, बिस्किट कौन खिलाएगा।
बाबुल कैसा उपहार दिया, खाली रह गई हाथ मले
जन्म दिवस था मेरा आज, क्यूँ आज ही के दिन छोड़ चले

अंजु दुआ जैमिनी,
फरीदाबाद, हरियाणा

पुतला क्यों जलाते हैं

साल-दर-साल
विशाल और विशाल
रावण बनाइए
जलाइए
खुशियॉ मनाइए
क्या फर्क पड़ेगा
पुतला जलाने से आम नेता-
तो जलता ही नहीं
रावण क्या ख़ाक जलेगा?
वैसे भी पुतला दो कारणों से
जलाया जाता है
एक
अपने उस संगे-संबंधी का
जिसे हम मरा मान लेते है
और उसका शव न प्राप्त होने
की स्थिति में
पुतले के माध्यम से
अंतिम संस्कार की रस्म निभा देते है
दूसरा-
उसका जिसको हम अपना
विरोधी या दुश्मन मान लेते है
और चाहकर भी उसका कुछ
नहीं बिगाड़ पाते है;
अब आप ही बताइए
इन दोनों में रावण कहॉ है
जो हर साल उसे जलाया जाता है
वैसे भी इस धरती पर सशरीर
रावणों की कमी है जो मरे हुए को
हर साल जलाया जाता है
यदि जलाने का इतना ही शौक है
तो अपने बीच व्याप्त
जिंदा रावण को जलाइए
अरबों की आबादी में
कोई एक राम
बनकर तो दिखाइए।

अजय चतुर्वेदी 'कक्का', सोनभद्र

सच कहने का साहस

अंखियों को रोज बरसना है
घुट-घुट कर जीना मरना है
चाहत के बादल छाये लेकिन
उनसे भी तौबा करना है
फूलों की बस बातें करते
कांटो से हमें ही गुजरना है
सच कहने का साहस नहीं
झूठ का जुल्म ही सहना है
शत्रुओं से क्यों बैर पालते
इन्हीं के बीच हमें रहना है
प्यार किसी से हो जाए तो
दिल को सदा मचलना है
नुकसान बहुत है इसमें भी
जीने का ढंग ही बदलना है।

रामचरण यादव, बैतूल,म.प्र.

ग़ज़ल

दीवार उठानो की सियासत न कीजिए
सच बोलूंगा जरुर शिकायत न कीजिए।
जो प्यार के संसार में कांटो को बिखेरे,
ऐसी तो गिरे भाई इनायत न कीजिए।
ये मुल्क, मुहब्बत का इक चमन था दोस्तों
मज़हब के नाम गंदी विरासत न कीजिए।
कल का जहां क्यों आज से झगड़ों में ही रहे
जो बांट दे दिलों को, वसीयत न कीजिए।
पश्चिम से आके दस्तकें देती है तबाही,
निज द्वार खोल उनकी इबादत न कीजिए।
इंसानियत के दायरे के पार हो 'शरद'
ऐसी तो आप मुझसे अदावत न कीजिए।

प्रो.शरद नारायण खरे, मंडला,मप्र.

गीतिका

सागर ऊँचा, पर्वत गहरा,
अंधा न्याय, प्रशासन बहरा।
खुली छूट आतंकवाद को
संत आश्रमों पर हे पहरा
पौरुष निःसंतान मर रहा
वंश वृद्धि करता है महरा।
भ्रष्ट सियासत देश बेचती
देश-प्रेम का झण्डा लहरा।
शक्ति पूजते जला शक्ति को
मौज मजा श्यामल घन घहरा।
राजमार्ग पगडण्डी निगलों
काला हुआ सुनहरा सहरा।
जनप्रनिनिधि को जनसेवा का
'सलिल' सिखा दें आज ककहरा।

संजीव सलिल, जबलपुर, म०प्र०

नेताजी

नेताजी
घर में घुसते ही चिल्लाए
अरे भाग्यवान कहां हो?
कम से कम जूते तो
उतार दिया करो,
नेताजी की पत्नी
जो थी अत्यन्त भोली
जाकर के उसने
फटे-पुराने जूतों की गठरी खोली
निकालकर कुछ जूते
नेताजी के सिर सात बार उतारकर
तड़ा-तड़ जमाये,
नेताजी मार खाकर
जोर-जोर से चिल्लाये
कोई है भाग्यवान
जो पत्नी से जूते उतरवाये।

शंशाक मिश्र 'भारती',पिथौरागढ़, उत्तराखंड

कितने दिन ठहरोगे लाल?

पड़ा दिखाई ज्यों ही गॉव
लगे ठिठकने मेरे पॉव
चमचम चमका उसका भाल
    लगा पूॅछने एक सवाल
    कितने दिन ठहरोगे लाल?
शुभागमन का गूॅजा शंख
खुशियों के उग आए पंख
सकल गॉव हो उठा निहाल
    उछला केवल एक सवाल
    कितने दिन ठहरोगे लाल?
जो भी मिला गया पहचान
यद्यपि मैं उससे अनजान
अपनेपन का मायाजाल
    मचला केवल एक सवाल

कितने दिन ठहरोगे लाल?
'झबुआ' लगा चाटने पॉव
हिलहिला सिर मॉगे दॉव
रस्सी-खूॅटा के बेहाल,
सबके मुॅह पर एक सवाल
कितने दिन ठहरोगे लाल?
कुॅआ-बाबड़ी उछले ताल
उछली मछली टूटे जाल
सभी पखेरु मोड़े चाल
उत्तर मांगे एक सवाल
कितने दिन ठहरोगे लाल?
जोर जोर से हुई पुकार
लो, आओ पहनो यह हार
शूल-फूल ने किया कमाल
अनुत्तरित था एक सवाल
कितने दिन ठहरोगे लाल?
शुभ स्वागत की शुभंग बहार
मलयानिल की सुखद बयार
सूरज चंदा पूॅछे हाल
लटका चारों ओर सबाल
कितने दिन ठहरोगे लाल?
मन गद्‌गद्‌ अनगिनती भाव
विह्‌वलता में डूबी नाव
भूले करना अंधर कमाल
याद न रहा जबाव सवाल
कितने दिन ठहरोगे लाल?
प्रो. डॉ. जयजयराम आनंद,भोपाल,

उन्मुक्त होना है

प्यार और कुछ नहीं,
मौका है, ठिकाना है।
भटकन के बीच कहीं,
ठहर-ठहर जाना है।
नींद की प्रतीक्षा में,
जागता बिछौना है।
प्यार वर्जनाओं में,
उन्मुक्त होना है।
बिना मोल देना है,
बिना मोल पाना है।
याचना के हाथो में,
प्यार एक खजाना है।
कहना है, सुनना है,
दिल को समझाना है।
खुद को भूल जाने का,
प्यार एक बहाना है।
दिनेश त्रिपाठी 'शम्स', पाटन, गुजरात

नेताजी

महिला दिवस पर
जब, नेताजी
बढ़ चढ़ कर
भाषण कर रहे थे
भद्र महिला उठी
गरेबान में झॉक
शब्दों को तौल
फिर बोल
तूने क्या कसर
छोड़ी है
पसली पसली मेरी
तोड़ी है
आग दिल में
भड़क आयी है
बोलने को
तुझ जैसे
नेताजी की पत्नी
माइक पर आयी है।
रितेन्द्र अग्रवाल, जयपुर, राजस्थान

पुर्नजन्म

लाशें
इंसानी लाशें
अचानक चीख पुकारकर
प्रश्नों की ज्वालामुखी लिए
फट पड़ती है कि
उसका कातिल कौन?
क्यों, किसने छीना
उसके जीने के अधिकार को?
दुःख, आंसू का सैलाब
सांत्वना, ढांढस की बारिश में
रहस्य की परतें खोलने
खामोशी के साये में
कानाफूसी का बाजार
गर्म हो जाता है।
लाशें बताती है-उसका रसूख
कत्ल का तरीका, समय
कानून व्यवस्था का चरमराना
कानूनी रखवालों का
घोड़े बेचकर सोना
अफवाहों के बवण्डर तले
अचानक जाग जाती है
कुछ जिंदा लाशें
शक की गुंजाइश लिए।
फिर शुरु होता है
हड़ताल, बंद, नारे,भीड़
शांतिभंग करने
अमन-चैन को
अपनी जागीर समझते
ये सिरकटी लाशें
उग ही आती है गली-मोहल्लों से
कुकुरमुत्ते सरीके
राजनीति की रोटी सेंकने।
इस अराजक तिमिर में
मौन के सुरंग में पड़ी लाश
मौत का लंगर डाले खड़ी है
अंतिम यात्रा की भीड़ का बाट जोहते
ताकि उस भीड़ का बाट जोहते
ताकि उस भीड़ में पहचान सके वह
अपने कातिल का चेहरा
फिर उसी के यहॉ
पुर्नजन्म में वह
मंदबुद्धि विकलांग जुड़वॉ लड़की
बनकर पैदा हो सके।।
रमेश कुमार सोनी, बसन, छ.ग.

साहित्य समाचार

हितेश शर्मा को हिन्दी साहित्य गौरव सम्मान

बिजनौर, वरिष्ठ साहित्यकार, बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी श्री हितेश कुमार शर्मा को उनके कृतित्व एवं समाज सेवा, उत्कृष्ट व्यक्तित्व के लिए श्री बाबा गरीब नाथ विद्या प्रचारिणी पीठ, झज्जर, हरियाणा द्वारा हिन्दी साहित्य गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया.

मर्मज्ञ को राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान

बंगलौर के सुप्रसिद्ध साहित्यकार ज्ञानचंद्र मर्मज्ञ को १६वें अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य समारोह, गाजियाबाद में पूर्व राज्यपाल एवं केन्द्रीय मंत्री डॉ० भीष्म नारायण सिंह की उपस्थिति में डॉ० रामशरण जोशी, अध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के हाथों 'राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान' प्रदान किया गया. यह सम्मान मर्मज्ञ की काव्य कृति मिट्टी की पलकें में मानवीय संवेदनाओं को चिन्हित करने हेतु दिया गया.

श्री मर्मज्ञ को १६ अक्टूबर इण्डिया हैबिटेट दिल्ली में आयोजित एक समारोह में केन्द्रीय खाद्य राज्य मंत्री श्री सुबोध कांत सहाय जी के हाथों 'राष्ट्रीय गौरव रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया.

महासंघ का आठवां प्रा.अधि. सम्पन्न

ओबरा, सोनभद्र, भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ का आठवां प्रांतीय सम्मेलन २३ नवंबर २००८ को संपन हुआ. इस अवसर पर संवाद प्रभा का विमोचन भी किया गया. सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित विध्याचल मंडल के मंडलायुक्त सत्यजीत ठाकुर ने दीप प्रज्जवल कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया. अपने सम्बोधन में मुख्य अतिथि ने कहा-'लोकतंत्र के तीनों स्तंभों की व्यवस्था चरमराने लगी है. इसे संभालने के लिए चौथे स्तंभ से ढेरों अपेक्षाएं की जा रही है. प्रियंका पाक्षिक के संपादक रामप्रकश वरमा ने पत्रकार के कर्तव्य, निष्ठा एवं दायित्व पर प्रकाश डाला. कहा कि कलम में वह ताकत है कि मंशा ठीक रही तो एक पत्रकार अच्छे भारत की कल्पना कर सकता है. मदन मोहन मालवीय हिंदी पत्रकारिता संस्थान , वाराणसी के निदेशक डॉ. राममोहन पाठक ने कहा कि सभ के अदंर एक पत्रकार है जो महत्वपूर्ण और संवेदनशील सूचनाओं से सुसज्जित है. पत्रकारिता के एजेंडा की बात करते हुए उन्होंने कहा कि पत्रकारिता का एजेंडा क्या हो यह चिंतन का विषय है. समाज का एजेंडा सेटिंग पत्रकारिता का लक्ष्य होना चाहिए. चौथे स्तंभ का केंद्र बिंदु क्या हो इसका जवाब उन्होंने आम आदमी के रुप में दिया. राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक ओम प्रकाश त्रिपाठी ने साहित्य एवं पत्रकारिता को जुड़वा भाई की संज्ञा दी. कार्यक्रम संयोजक एवं पत्रकार महासंघ के ध्रुव बिंदु मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी ने पत्रकारों में सहयोग की भावना जागृत होने की आवश्यकता पर बल दिया. पत्रकारिता में संवेदना का उच्च स्थान होने की बात पूर्व राज्य सभा सदस्य रत्नाकर पांडेय ने कही.

इस अवसर पर स्वामी हरि चैतन्य महाराज को चॉदी का मुकुट पहनाकर सम्मानित किया गया. अन्य वक्ताओं में संजय पाठक, रामकुमार पांडेय, डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय, पवन तिवारी, राहुल श्रीवास्तव, विजय शंकर चतुर्वेदी आदि शामिल थे.

इस अवसर पर उमाशंकर सिंह, रविन्द्र नाथ पांडेय, जी. एस.खान, रमेश देव पांडेय, अजय कुमार सिंह, ब्रहमचारी दूबे, ए.बी.सिंह, सुधीर कुमार, गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, रमेश यादव, देवानंद मिश्र, शशिकांत श्रीवास्तव, अखिलेश पांडेय, सुनील सिंह, नईम गाजीपुरी, रामप्रसाद यादव, उपेंद्र तिवारी, भरत गुप्ता, अमर वैश्य आदि उपस्थित थे. स्वागत सतीश भाटिया, अध्यक्षता प्रांतीय अध्यक्ष रमांकात त्रिपाठी, संचालन आर.पी.उपाध्याय व आभार मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी ने प्रकट किया.

युवा समूह प्रकाशन द्वारा सम्मानित होते हुए पं. मुकेश चतुर्वेदी 'समीर', सागर, म.प्र.

स्वास्थ्य

रति से पूर्व एवं परे

श्री वीरेन्द्र कुमार खुल्लर, दिल्ली

एक स्त्री ने अपनी प्रथम रतिक्रिया का वर्णन इन शब्दों में किया है, कि बिस्तर पर जाते ही पति ने एक उन्मादपूर्ण आलिंगन में उसे कस लिया और एकदम सम्भोग करना शुरू कर दिया. तब उसे ऐसे लगा जैसे उसके साथ बलात्कार किया जा रहा है और उसी क्षण से उससे घृणा हो गई.

ऐसे ही अनेक नव-बधुओं के किस्से हैं जिन्हें, जिन्होंने शादी की पहली रात को पुरुष की लापरवाही के कारण ग्रस्त और भयभीत होकर आत्महत्या करली या पागल हो गई.

रति से पूर्व स्त्री को तैयार करना न केवल उसे पीड़ा से बचाने के लिए एक मामूली इन्सानियत का काम है, बल्कि पुरुष के हित के लिए भी, जरूरी है, क्योंकि ऐसा करके इस पारस्परिकता से पुरूष के सुखद संवेदनों की मात्रा बहुत ज्यादा बढ़ जाती है, जिससे स्त्री और पुरुष दोनों के स्वास्थ्य को अकल्पनीय लाभ पहुँचता है. यह बात तो बिल्कुल स्पष्ट है कि शादी करके पुरुष हमेशा के लिए स्त्री को सिर्फ एक प्रणयचेष्टा-द्वारा जीत नहीं सकता है-इसलिये उसे प्रतयेक बार मैथुर करने से पूर्व स्त्री को आकर्षित और विमोहित करना चाहिए.

इस सम्बंध में जंगली जानवरों के उद्धरण ठीक रहेंगे. जंगली जानवर पुरुष के तरह बेवकूफ नहीं होते. कोई भी जंगली जानवर उस समय तक अपनी मादा के साथ मैथुन नहीं करता जब तक कि वह अपनी प्रणय-क्रियाओं द्वारा 'सेक्स एण्ड सोसायटी' में लिखते है-'हमें यह स्वीकार करनी चाहिए कि प्रजनन संबंधी जीवन प्रवल उत्तेजना के साथ सम्बन्धित है, नहीं तो इस जीवन की उपेक्षा हो और प्राणीवर्ग ही विनष्ट हो जाय. दूसरी ओर अगर मादा को मोहित करके जीत लेना आसान होता, तो काम एक खिलवाड़ और व्यसन बन जाता. वह प्राणी वर्ग के शक्ति को क्षय करने वाला और प्राणनाशक होता. मादा उस समय तक आत्म-समर्पण नहीं करती जब तक वह पूरी तरह से उत्तेजित न होई हो गई हो. (चिड़ियों की प्रणय-साध ाना में यह बात प्रत्यक्ष है) और नर को इस प्रकार से व्यवहार करना होता है जिससे वह अनुकूल स्थिति में आ जाय औश्र चूँकि नर इस कार्य में अधिक सक्रिय भाग लेता है, इसलिए की एक अद्भुत और आकर्षक टेकनीक का विकास कर लेता है. मादा संकोच और अन्य हाव-भाव दिखाकर उसे परे हटाती है, जिससे वह नर को अधिक आकर्षित और मेहित कर देती है और इस बात के लिए मजबूर कर देती है कि वह उसे भी उतनी ही अधिक उत्तेजित अवस्था में ल आए.'

हर जंगली जानवर में कामोत्तेजना का निश्चित समय होता है. वे उसी प्रणय-क्रीड़ाए करते है जबकि मादा के अन्दर प्रकृत इच्छा जागृत होने लगती है. नर अपनी मादा के पास उसी समय जाने दिया जाता है जबकि मादा मे मैथुन कराने की स्वाभाविक इच्छा जाग्रत होती है.

हर पति के लिए सबसे बड़ा नियम यह है कि प्रति वार सम्भोग से पहले स्त्री को कोमलता से आकर्षित और उत्तेजित करें और जब तक स्त्री स्वयं भी समागम की इच्छा न करे और शारीरिक रूप से तैयार न हो जाए, उस समय तक कभी भी मैथुन नहीं करना चाहिए.

एक डाक्टर ने एक पति के बारे में बताया, कि वह अपनी पत्नी के साथ अक्सर रति क्रिया करता था लेकिन इसके पहले उसके अन्दर आवश्यक रति-भावना नहीं जागती थी. उसका जब विवाह हुआ तब वह एक अन्जान लड़की थी, किन्तु वह अक्सर अन्दर से महसूस किया करती थी कि उसके पति के प्रेम में कोई कमी रह जाती है. उसका पति हमेशा उसके गाल या होठों का चुम्बन करता था, परन्तु एक बार जब उसकी काम-भावना का ज्वार अपने शिखर पर था, उसके अन्दर यह कामना जगी (उसके अवचेतन में ही) कि काश, उसके पति अपने होंठ उसके उरोजों से लगाकर उन्हें दबाते.

एक स्त्री के उरोजों और उसके समस्त काम-जीवन में इतनी सम्वेदशील पारस्परिकता होती है कि उनको दबाने से एक आनन्दमयी शारीरिक उत्तेजन महसूस होता है. इस प्रकार उरोजों पर प्रेमी के होठों का स्पर्श स्त्री में मिश्रित आनन्द का उद्रेक करता है. काश सभी पुरुष जाना पाते कि उरोजों का चुम्बन स्त्री को पिघलाकर कोमल बना देता है. स्त्री में रति-क्रिया के लिए शारीरिक इच्छा उत्पन्न करने का यह सबसे पहला और अचूक ढंग है. उरोजों की नशों का सम्बन्ध गर्भाशय से संयोजित है जब उरोजों को दबाया जाता है तो गर्भाशय में थिरकन सी होती है और स्त्री आनन्द महसूस करती है. स्त्री के उरोजों को ज्यादा नहीं दबाना चाहिए. क्योंकि इसे नशे भर जाने का खतरा रहता है. वैसे भी कोई पत्नी वक्ष पर रूक्ष और आक्रमण नहीं चाहेगी. पति को चाहिए कि पूरे जोश के साथ अपनी पत्नी को आकर्षित करने और उसमें कामेच्छा जगाने की कोशिश करें. अगर पुरूष चाहे तो स्त्री की काम वृत्तियॉं और उसके गुप्त अंगो को उभार कर, उसके समस्त शरीर और मन को भी उभार कर सकता

है. परन्तु ऐसा करने मे समय लगता है. स्त्री के योनिक्षेत्र में बाहर की ओर निकला हुआ अंग, भंगाकुर या भगनाशा होता है जो योन दृष्टिकोण से पुरूष के लिंग से मिलती-जुलती आकृति का होता है. इसका स्थान नारीजननेन्द्रियों में अत्यन्त महत्वपूर्ण है. यह भंगाकुर जो स्त्री की योनी के भीतरी होठों के बीच में होता है, जब स्त्री गरम हो जाती है उस समय फूलकर बड़ा हो जाता है. वह हरकत करने से अत्यन्त उत्तेजित हो जाता है और स्त्री के समूचे शरीर में सिहरन भर देता है. क्योंकि इसमें नाड़ियों का जाल होता है जब कभी भी किसी स्त्री की भगनासा को छुआ जाता है अथवा उसे दबाया जाता है तो स्त्री में अत्यन्त कामोत्तेजना बढ़ जाती है. मैथुन के समय जब शिश्न के प्रहर्षित भगनासा घर्षित होती है तो स्त्री को अत्यन्त आनन्द आता है. बहुत सी स्त्रियों को पूर्ण यौनसुख तब तक प्राप्त नहीं होता जब तक भगनासा को काफी उदीप्त न कर दिया जाए. कई बार केवल ऊँगली से बार-बार छूने औश्र रगढ़ने से ही अधिकांश स्त्रियों को चरमतुष्टि हो जाती है.

एक काउन्टेस का कथन है कि लिंग के कोमल मुण्ड से जब भगनासा का स्पर्श किया जाता है तो स्त्रियों को विशेष कामसुख और कामोत्तेजना प्राप्त होती है, फिर तो वे शीघ्र ही मुख्य सम्भोग के लिये आतुर होती है. क्योंकि, स्त्री के यौन-स्नायु उसके भंगाकुर में केन्द्रित है और बहुत थोड़ी भगोष्ठों तथा गर्भग्रीवा में. स्तन चुचुक और भगनासा के अलावा भी स्त्री और पुरुष के शरीर में कई काम-केन्द्र है-उदाहरणता होठों को ही ले लें.

होठों द्वारा पत्नी के किसी भी अंग का स्पर्श पति के लिए सुखद ही होता है. अगर पति-पत्नी दोनों ही अपने होठों से एक दूसरे को चूमें तो बड़ा आनन्द मिलता है. होठों के बाद जीभ के द्वारा अन्दर स्पर्श किया जाता है अर्थात् जीभ मुख के अन्दर भागों की तरह-तरह से छूना या चूसना होता है. स्तनों के चूचुको का चुम्बन किया जाता है. जंघाओं, गाल योनि क्षेत्र आदि स्थानों को भी हाथ से छुने, दबाने या सहलाने से भी कामोत्तेजना होती है और काम सुख की अनुभूति भी.

पुरूष स्त्री के सम्पर्क में आते ही रति के लिए तैयार हो जाता है क्योंकि अधिकांश पुरूषो के अन्दर चाहे सख्ती से दबाया ही क्यों न जाय, कामेच्छा हर समय उनींदी पड़ी रहती है, उनमें यह इच्छा हर समय मौजूद रहती है, थोड़ी सीस उत्तेजना से जाग उठने को तैयार रहती है, और अक्सर अपने आप ही इतने प्रबल रूप से उदीप्त हो जाती है कि उसे लगातार सचेत करके दबाना पड़ता है. लेकिन स्त्री के अन्दर जगाने, उसे तैयार करने के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता पड़ती है. क्योंकि स्त्रियों की यौन भावना के केन्द्रीयकरण तथा विकास के लिए एक लम्बे काल की उत्तेजना जरूरी है. पर्याप्त उत्तेजना के बावजूद स्त्री को सम्भोग की चरमसीमा तक पहुॅचने मे पुरुष की अपेक्षा काफी अधिक समय लगता है. इसलिए बिना काम-क्रीड़ा के अधिकाश स्त्रियों का संतुष्ट होना असम्भव हो जाता है. दोनों के सुख की चरमता तक पहुंचने के लिए यह जरुरी है कि पुरूष अपनी गति की धीमा रखें और स्त्री की गति तेज होती रहे.

यौन-क्रीड़ा में स्त्री के शरीर का प्रत्येक भाग शारीरिक रुप से उत्तेजित हो जाता है. यहॉ तक कि त्वचा में भी चेतना जाग उठती है, और उसके होठों में, जो अत्यधिक संवेदनशील होते है, गहरी प्रतिक्रिया होती है. लेकिन फिर भी वह धीरे-धीरे उत्तेजित होती है-यौन जागरण के पहले ही उसे एक लम्बी प्रेम क्रीड़ा की आवश्यकता पड़ती है.

प्रेम क्रिड़ा तभी लाभदायक होती है जबकि उसका अन्त मैथुन में परिणत हो, अन्यथा प्रेम-क्रिड़ा मर्द की नामर्द की ओर खींचना शुरु कर देती है. इसलिए अगर रति की सम्भावना न हो तो ज्यादा देर तक प्रेम-क्रीड़ा नहीं करनी चाहिए. चुम्बन करने तथा यौनोग सहलाने से न सिर्फ शिश्न मे तनाव आकर रूक जाता है, बल्कि यौन ग्रन्थियों से रिसकर मूत्रनली में अटक जाते है. इससे शिश्न तथा अण्डकोष में पीड़ा होनी शुरु हो जाती है. अगर ऐसी रोगी का वीर्यपात न हो तो उसे काफी कष्ट महसूस होता रहता है. ऐसी हालत में हस्तमैथून अवश्य कर लेना चाहिए. इसी प्रकार स्त्री को भी अगर प्रेम-क्रीड़ा के बाद रति का अवसर मिले तो उसे भी हस्त-मैथुन आदि का आश्रय लेना हितकर है. काम-क्रीड़ा के समय बहुत बार स्त्री की ऑखों की गति व उसके क्रिया-कलापों से उसके सर्वाधिक संवेदनशील अंग को हम जान सकते है. अनुभवी स्त्रियॉ हमेशा रति से पूर्व दूर भागने का अभिनय करती है, पर यह सिर्फ नर को उत्तेजित करने के लिए ही.

यौनोत्तेजना की अवस्था में विभिन्न व्यक्तियों में यौन ग्रन्थियों का रस विभिन्न मात्राओं में स्रवित होता है. कुछ पुरुषों में तो इतना रस स्रवित होता है कि वे इसे वीर्यपात समझ लेते है. कुछ स्त्रियों में भी कभी-कभी यही स्थिति उत्पन्न हो जाती है और वे अत्यधिक रसस्राव से भी घबरा जाती है. चरम सुख के तुरत बाद पुरुष स्खलित हो जाता है और स्त्री क्षणित हो जाती है. स्त्री का यह क्षरणा उसकी दोनों बारथीलिन ग्रन्यिों और दोनों सस्किन ग्रान्थियों गर्भाशयग्रीबा-स्थित प्रजनन अंगीय संकुचनों, विशेषकर

गर्भद्वार के निकट गर्भाशय के संकुचन से होती है.

यह बात तो निश्चित है कि हर व्यक्ति को चरमसुख मिलने के ठीक पहले और चरमसुख मिलते समय सर्वाधिक सनसनाहट महसूस होती है. अगर सम्भोग में स्त्री को संतुष्टि नहीं मिलती तो उसमें असंतोष और पति के लिए घृणा पैदा हो जाती है. यदि स्त्री को उत्तेजित करने के पश्चात संतुष्ट न किया जाय तो वह उत्तेजना के आवेश में रात-भर जागती रहती है और हस्त मैथुन या किसी अन्य उपाय से अपनी कामेच्छा को शांत करती है.

कुछ लोग रति के बाद पानी या ठंढी चीजें पेय पीते है. यह हानिकारक है क्योंकि उष्म और गतिमान शरीर रूपी मशीन के ऊपर शीतल प्रभाव पड़ता है और वे शिथिल हो जाते है. सम्भोग के बाद पौष्टिक आहार लेना चाहिए, जैसे गर्म दूध आदि. सम्भोग क्रिया के समय वातावरण का भी काफी महत्व है जैसे गर्मी के दिनों में चॉदनी रात और ठंढी वायु बरसात में रिम-झिम पड़ती फुहार तथा जाड़ों में कड़ाके की सर्दी. सर्दियों में पंजाबी में एक कहावत भी है आ गया पौष बचनगे ओ जेड़े सोनगे दो. अर्थात जनवरी मास आ गया है और इस सर्दी में वे ही बचेगें जहॉ दो जने इकट्ठे सोयेंगे.

इन सबके साथ-साथ शारीरिक स्वच्छता का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए. विशेष कर दॉत स्वच्छ हो एवं उनकी नियमित सफाई की जाय. जिस रात भोग करना हो उस दिन शाम के भोजन में प्याज नहीं खाया जाय तो अच्छा है, क्योंकि प्याज का सुगन्ध या दुर्गन्ध कई स्त्रियों में काम भावना नहीं जागृत होने देती. इसके साथ चुम्बन में भी न स्त्री को और न पुरुष को ही आनन्द आता है इसलिए स्त्रियों को भी प्याज या मूली का सेवन उस रात को नहीं करना चाहिए. इसके साथ ही पुरुष को अपने लिंग को भी प्रतिदिन सफाई करनी चाहिए क्योंकि लिंगमुंड पर एक सफेद से रंग की मैल जम जाती है जिसे स्मेगमा (लिंग के चमड़े के नीचे का चिकना पस कहते है.) इस संबंध में एक डाक्टर कहते है कि अगर स्मेग्मा प्रतिदिन न हटाया जाय तो लिंग का कैंसर होने का खतरा रहता है. इसी प्रकार स्त्री को भी अपने यौनांगो की सफाई प्रतिदिन करनी चाहिए.

जब स्त्री के अन्दर कोई काम भावना पूरी तरह जाग्रत हो जाए और उसके अन्दर सारी प्रतिक्रियाएं गतिमान हो जायॅ तो भी वास्तविक मैथुन थोड़ी देर बाद ही करना चाहिए. मैथुन के समय वास्तव में क्या होता है? इस सम्बंध में प्रसिद्ध लेखिका एवं डॉक्टर मेरी स्टोप्स लिखती है जब प्रारम्भिक प्रणय-क्रीड़ा से स्त्री पुरुष दोनों उद्विप्त हो जाते है, उस समय पुरुष का उत्तेजित बड़ा और सख्त हो गया लिंग स्त्री योनि में दबाकर प्रविष्ट कर दिया जाता है. साधारणतः जब स्त्री उत्तेजित नहीं होती उस समय योनि-मार्ग और यहॉ तक कि उसके द्वार को रुकने वाले कोमल तन्तु होंठ भी सुख और झुर्री पड़े हुए रहते है, और पुरुष फूले हुए लिंग के मुकाबले योनिद्वार संकुचित होता है. परन्तु जब स्त्री गरम हो जाती है अर्थात् रति के लिए पूरी तरह उत्तेजित हो जाती है. उस समय उसकी योनि में रक्त का तीब्र संचार हो जाता है, और एक सीमा तक उसके अंग भी पुरुष की ही तरह फूल जाते है और साथ ही गिल्टयों का रस निकल कर योनिद्वार को स्निग्ध बना देता है. योनि-मार्ग के अन्दर की दीबारे चूंकि काफी फैल जानो वाली पेशियों की बनी होती है, इस समय आसानी से फैलकर पुरुष के बढ़े हुए लिंग को धारण करने योग्य हो जाती है. प्रेमोन्मत्त स्त्री का योनि-मार्ग अपने आप संकुचित और शिथिल भी होने लगता है. हमारे शारीरिक ढॉचे पर विचार का इतना प्रबल प्रभाव पड़ता है कि कुछ लोगों में तो प्रेमी या प्रेमिका ख्यात आते ही, या कोमल शब्दों चुम्बनों और प्रणय-मनुहार की सूक्ष्म क्रियाओं से ही ये सारे शारीरिक परिणाम पैदा हो जाते है.

इसलिए इस बात का आसानी से अनुभव किया जा सकता है कि अगर कोई पुरुष ऐसी स्त्री की योनिं में लिंग प्रवेश करने की चेष्टा करता है, जिसको पहले से प्रणय चेष्टाओं द्वारा उत्तेजित करके वह इन विन्दु तक नहीं ले आया है कि उसके अन्दर रति-क्रिया के लिए तैयार हो जाने के सारे पूर्व लक्षण उत्पन्न हो गये है, तो इसका अर्थ यह है कि वह एक अत्यन्त संकुचित योनि और रुक्ष दीवारों के भीतर प्रवेश करने की जवरन कोशिश करता है. इससे स्त्री के मन में उस पुरुष के प्रति, जो इतनी लापरवाही से उसका इस्तेमाल करता है. मानसिक विद्रोह और विराग तो होताही है, साथ ही शारीरिक पीड़ा भी पहॅुचती है. इसके विपरित उत्तेजित और गरम स्त्री में पहले से ही तैयार हो जाने के कारण, योनिद्वार गिल्टियों के रसों से स्निग्ध हो जाता है और अन्दर के स्नायु और पेशियॉ क्रिया तथा प्रतिक्रिया के लिए और पुरुष लिंग धारण करने के लिए तत्पर हो जाती है.

जब पति-पत्नि दोनों रति-क्रिया में संयुक्त हो जाते है, तो परिणाम-स्वरुप थोड़े या अधिक अवकाश के बाद पुरुष को शारीरिक एवं मानसिक उत्तेजना अपनी चर्मसीमा पर पहॅुचकर उसके संवेदनों में एक मद होशी पैदा कर देती है और उसका वीर्यपात हो जाता है. वीर्यपात से पहले पुरुष का एक-एक अंग प्रत्यग एक-एक स्नायु एक-एक मांसपेशी एक अजीव खिचावट की अवस्था में जा पहॅुचती है.

चिट्ठी आई है

विश्व बन्धुत्व की प्रेरक पत्रिका

कम्प्यूटर के इस युग मे, भौगोलिक दूरियॉ नगण्य हो गई है. विज्ञान ने भौतिक प्रगति की अनन्य ऊँचाइयॉ छुई है. सामान्य जीवन स्तर सुधरा है. लेकिन मानवीय दुर्गति उसी गति से हुई है. भौतिक चकाचौध में, आर्थिक प्रतिस्पर्धा में नींद खो गई मनुष्य की. शारीरिक श्रम न्यून व मानसिक बोझ अतुलनीय बढ़ा है. दुष्परिणाम सामने है, भोग विलास की अंधी दौड़ में, हृदयाघात, डायविटीज, एडस व केसरजनित रहस्यमयी आपदायें मुँह बायें खड़ी है. कदाचार, आतंक हिंसा, बलात्कार, लूट, अपहरण व भ्रष्टाचार से पोर-पोर आक्लांत है.

प्रेम, स्नेह, सहयोग व एकत्व बोध का भावात्मक पखेरु तड़फ रहा है. जाति, कौम, मजहब व राष्ट्र से विशाल भाव प्रवण विश्व बन्धुत्व है 'विश्व स्नेह समाज' इस लक्ष्य को लेकर, शैशवी काल में है. यह आवाज बने एकत्व, समत्व, व विश्वभ्रातृत्व की ऐसी सुमेक्षा है.

रामप्रसाद गुप्ता, आगरा, उ०प्र०

++++++++++++++++++++++

प्रेक्टिकल करने की जरुरत है'

प्रिय भाई,

सप्रेम ओङ्म सांई राम. आपने पत्रिका के जुलाई अंक में मेरे विचारों, अभिव्यक्ति को स्थान दिया, हृदय से आभारी हूॅ. अब तो मेरे भाई, दाल रोटी खाते हैं, और प्रभु के गुण गाते है, बस यही जिंदगी रह गई है. कभी कभार कुछ लिखना कुछ खास नहीं, हो हवा जाता है. अब तो मेरे भाई जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, पैसा दो और तमाशा देखो वाली बात रह गई है. भ्रष्टाचार कहां नहीं? क्या साले मीडिया वाले दूध के धुले हैं? मीडिया वाले साले दुनियां की पंचायत करते है पर उनके यहां क्या रामराज्य हैं. गांधी के स्वप्नों का भारत है? संसद की पूंछिये मत, नेताओं की पूछिये मत, सी.बी. आई. की पूछिएं मत, पुलिस वालों की पूछिये मत, बम ब्लास्ट को पूछिये मत, पर मेरे कृष्ण के गोकुल-वृन्दावन, जब भी और जहां भी कोई बम ब्लास्ट होता है साला नेता कोई नहीं मरता. जनता ही मरती??? लेखक मंच पर ताल खूब ठोकता है बहुत गाल बजाता है पर क्या सबसे कमजोर जांब नहीं लगता???

गोकुल भईया! लिखने और गाल बजाने से काम नहीं चलेगा 'प्रेक्टिकल करने की जरुरत है'?? चिट्ठी आई है, स्तंभ में सिर्फ प्रशस्ति पत्र ही...... जरा ठहरियेगा...

चलो लोकतंत्र को देखने,
अस्पताल चले,
लकवा लग गया है
आई.सी.यू में है???

किशन कुमार अग्रवाल 'केन', मुबई,

++++++++++++++++++++

आम आदमी करे तो क्या करे

श्रद्धेय द्विवेदी जी

पत्रिका का सितम्बर ०८ अंक मिला. आपने मेरा सम्मान प्रकाशित किया आभार! नकली दूध के संदर्भ में आपका लेख पढ़ा. सवाल ये है कि आम आदमी करे तो क या करे. जाये तो कहॉ जाये. गांवो में चलिए कुछ न कुछ जुगाड़ हो जायेगा. लेकिन शहरों में? बच्चे क्या पीयें, कैसे जीयें. हर चीज में मिलावट है, हर जगह मिलावट है. सरकार के कानो में भी आहट है किन्तु सत्ता की भी तो चाहत है. जिस दिन शासन-प्रशासन चाहेगा, उसी दिन भ्रष्टाचार मिट जायेगा, लेकिन... यहॉ पर अपना एक दोहा उल्लेखित करना चाहूँगा, जो इनके चरित्रों को उजागर करता हे-

सड़क से संसद तक करें, खुद ही ये हड़ताल।
जनता करे तो गलत है, वाह मुॅगेरी लाल।।

चिट्ठी आई है कालम में एक पाठक ने कागज की क्वालिटी सुधारने की बात कही है. निश्चित रुप से बात सही है किन्तु पॉच रुपये में यह कदापि संभव नहीं है। मेरा मानना है कि जो पाठक पॉच रुपये खर्च कर इस पत्रिका को पढ़ते है, वे खुशी-खुशी दस रुपये भी खर्च कर सकते है. और नहीं करते या नहीं करना चाहते वे दो रुपये भी खर्च नहीं कर सकते हैं. कुल मिलाकर इतने कम दाम में नियमित एवं विविध लेख, कविताओं, एवं समीक्षाओं से पूर्ण अंक निकालने के लिए साधुवाद.

अजय चतुर्वेदी 'कक्का', रिहन्द नगर, सोनभद्र, उ०प्र०

++++++++++++++++++++

मातृशक्ति का सम्मान है

परम श्रद्धेय, पूज्यवर श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी

आपके द्वारा प्रथम आर्शीवाद स्वरुप प्रेषित पूर्व अंक फरवरी अंक प्राप्त हुआ. आभारी हूॅ और आभार व्यक्त करता हूॅ श्रद्धेय श्री तुमुल शास्त्रीजी का जिन्होंने मुझ तक तुमूल तुफानी पत्र भेजकर आप साहित्य मनीषियों से परिचित कराया और यह अंक भी मेरा उक्त मार्ग प्रशस्त करेगा.

आपने परम आदरणीया बहन डॉ० तारा सिंह के व्यक्तित्व व कृतित्व पर केवल प्रकाश ही नहीं डाला बल्कि आपके सम्मान में पूरा विशेषांक ही समर्पित किया. यह केवल यशस्वनी मूर्धन्य कवियित्रि का ही सम्मान नहीं, पूरी मातृशक्ति का सम्मान है. आदरणीया बहन तारा जी को समर्पित मेरी भावाजंलि-

तारा सी बहिनें दृग-तारा है विश्व को।
वाणी की बेटियॉ सहारा है विश्व को।
लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर',छतरपुर, म.प्र.

+++++++++++++++++++++

डॉ० तारा सिंह पर केन्द्रित अंक मुझे प्राप्त हुआ. तारा सिंह जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर अंक को पढ़कर अच्छा लगा. इसमें हमारे संरक्षक देवेन्द्र नारायण दास जी का विचार भी लगा है. मेरी समीक्षा शायद उन तक विलंब से पहूंची इसलिए उसे स्थान नहीं मिल पाया.

रमेश कुमार सोनी, बसन,छ.ग.

+++++++++++++++++++++

हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

आप पत्रिका व संस्थान के माध्यम से हिन्दी सहित अनेक भाषाओं के साहित्यकारों, कवियों, लेखकों व पत्रकारों की जो स्नेहिल व सम्मान जनक सेवा कर रहे है। वह अद्वितीय है. मेरी मॉ विन्ध्याचल देवी से अहर्निष प्रार्थना है कि वह आपको और अधिक शक्ति सर्म्वधन प्रदान करें और आर्थिक, मानसिक, व साहित्यिक बल देवे ताकि इस महान सामाजिक/साहित्यिक कार्य को और मजबूती के साथ आप आगे बढ़ाने में सफल हो सके.

आपने मुझ अकिंचन साहित्य सेवी व पत्रकार को अपने संस्थान की ओर से हिन्दी साहित्य व पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए पत्रकार श्री सम्मान से अलंकृत करने का साहस किया, इसके लिए कोटिशः बध ााई साधुवाद. संस्थान की प्रगति एवं साहित्यकारों समाजसेवियों व पत्रकारों का भविष्य में इसी तरह कार्य करते रहने की संकल्पना के साथ पुनः हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी, सोनभद

+++++++++++++++++++++

आदरणीय भ्राता श्री

सादर नमन्

सर्वप्रथम आपके हित मंगल कामना! संस्थान के विषय में इतना कुछ देखकर व समझकर काफी प्रसन्नता हुई. मेरा दुर्भाग्य ही था कि मैं काव्य संध्या का आनन्द नहीं ले सकी. सभी लोग को प्रयाग में स्नान के लिए लालायित रहते है परन्तु मुझे उस साहित्य संगम में स्नान कर बहुत ही आनन्द मिला. उस समय लग रहा था कि मैं किसी दूसरी दुनिया में हूँ.

इसका श्रेय आपको जाता है. मैं भी तो साहित्य पथ की एक पथिक हूँ. यदा-कदा पत्रिकाओं में छपती रहती हूँ. आपको पत्र लिखने का उद्देश्य यह है कि आपकी संस्था से जुड़ना चाहती हूँ. यह एक बड़ी ही अच्छी पहल है कि हमें अपनी मातृभाषा की गरिमा को बनाये रखना है. उसका माध्यम हम साहित्यकार, सम्पादक, कवि, लेखक आदि सभी हो सकते है. और तो यह साहित्यकारों की जिम्मेदारी व कर्तव्य बनता है कि इस साहित्य रुपी वृक्ष को अपने सबल विचारों के जल से सिचिंत करते रहे.

उसी दिन ट्रेन में लौटते समय हम लोग सम्मेलन की चर्चा कर रहे थे. आस-पास दो चार बुद्धीजीवी सज्जनों ने स्थान ले रखा था. उन्हें शायद हमारी बाते कम अच्छी लगी. क्योंकि हम अपनी मातृभाषा के प्रति नतमस्तक थे और सर्वदा जागरुक रहने की बात कर रहे थे.

सज्जनों ने इस बात का प्रबल विरोध किया कि हिन्दी से कुछ भी नहीं हो सकता. केवल हिन्दी के साथ जीवन कठिन हो जायेगा. मैंने उनको समझाया. देखिये, हमें दूसरी भाषा का अच्छा से अच्छा ज्ञान होना चाहिये. परन्तु हमें अपनी मातृभाषा को भूलना नहीं चाहिए. और अपमान तो महान अपराध है. परन्तु मैं सफल नहीं हुई. मन को बड़ा दुःख पहुॅचा. लगाकि सच में हमारी हिन्दी का मार्ग अवरुद्ध हो रहा है. कुछ विशेष करने की आवश्यकता है. मन रोने लगा कि ये भूल गये कि साहित्य समाज का दर्पण है. नीव से लेकर कंगूरे तक बात साहित्य में लिखी जाती है. अरे! 'कलम के सिपाही' से बड़े-बड़े राजनेता डर जाते है. आजादी के समय की कवितायें आज भी मन में जोश पैदा कर देती है. और आज का आम आदमी जागरुक होते हुए भी सत्य साहित्य को नकारने लगा. ऐसा क्यों? भ्राताश्री मन में यह बात काफी दिनों से घाव बना रही थी. सो लिख डाला. इतना अवश्य जानती हूँ कि साहित्य, अपनी मातृभाषा की पीड़ा आप समझ सकेंगे.

संस्था के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ विदा!

श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव, रायबरेली

+++++++++++++++++++++

नव गति नव लय ताल छन्द...

तीज-त्योहार के साथ नये साल के आगमन पर मेरी तमाम शुभकामनायें स्वीकार करें.

शुभम्.....

डॉ० चंद्रकांत त्रिपाठी,
कुलसचिव
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान,
आगरा, उ०प्र०

लघु कथांए

श्रीमती इन्दु सिन्हा, रतलाम, म.प्र.की लघुकथाए

खीर

मॉ..........ऽ. आज खीर मिलेगी ना? पॉच वर्षीय बंटु ने मॉ का फटा ऑचल पकड़कर कहा.
'हॉ रे, तेरे बाबू आज आज श्राद्ध कराने गये है. मॉ ने कहा. ये सुनकर बंटु की ऑखें खुशी से चमक उठी.

:::

शादी

वर्षो बाद अचानक एक दिन बाजार में पूजा दिख गयी. पहले तो मैं पहचान ना पायी बेडौल मोटा शरीर साथ में एक आठ वर्षीय बच्चा. अरे, पूजा ये क्या हालत बना रखी है? मैने आश्चर्य से पूछा.
अरे नीतू तू? तेरे पर ज्यादा असर नहीं हुआ. नीतू ने ताज्जूब से कहा, भई वाह, तेरे तो बड़े चर्चे है चित्रकारी में जहॉगीर आर्ट गैलरी तक पहुँच गयी तू.
तू क्या कम थी? सुन्दर सुरीला गला अब क्या गाना छोड़ दिया? मैने पूछा.
अरे यार अब क्या गाना और सुन्दरता? अब तो शादी हो गयी है अब क्या करना?
पूजा ने एम.काम की शिक्षा का सार समझाया मैं उसका जीवन दर्शन समझने मं असमर्थ थी.

:::

सेक्स वर्कर

ए......ऽ.....ऽ..... चलती है क्या?
नई साब.
क्यों?
आप ज्यास्ती तंग करता, पैसे भी कम देता.
साली धंधे वाली.
साब गाली मत दो, पेपर नही पढ़ता क्या?
'सेक्स वर्कर' बोलो.

:::

देशभक्ति

चुनावी माहौल गरम था. रैली भाषण व देशभक्ति का बखान करने का मौसम था. सभी नेता अपने को जनता का हितैशी साबित करने में लगे हुए थे.
ये पार्टी का झण्डा घर लिये क्यों चल रहे हो? रवि ने राज से पूछा?
अरे यार, झण्डे का बच्चों का बस्ता बनवा देंगे. डंडे जलाने के काम आ जाएंगे. बस हो गयी देशभक्ति. अब सीधे घर चलो.

:::

पढाई

साब इस बार से पैसे थोड़ा ज्यादा दो.
क्यों आज क्या खास है?
मेरी बच्ची को होस्टल में रखकर पढ़ाना चाहती हूँ.
वो हॉस्टल में रहकर भी यही सीखेगी. वहॉ छिपकर यहॉ तेरे साथ खुले में, यही ठीक है समझी.

आनन्द बिल्थरे, बालाघाट की लघुकथा

कड़वी काफी

काफी हाउस से निकलते निकलते, राहुल की नजर 'सत्य की खोज' के साहित्य संपादक, शंभु प्रसाद 'मस्ताना' पर पड़ी. वे कोने की मेज पर अपने चार-छः चेले-चपाटियों के साथ बैठें, गप्पे हांक रहे थे. ये, वे ही लोग थे, जिनकी रचनायें, साहित्यिक पृष्ठ पर, धड़ल्ले से, प्राशित होती रहती थी।
राहुल पर नजर पड़ते ही, मस्ताना बोल उठे-'अरे, आओ राहुल.', बहुत दिनों बाद, दिखाई दिये हों. कहां रहते हो?
आपके शहर को छोड़कर अपना ठिकाना है भी कहां' मस्ताना साहब. जीना यहां, मरना यहां.
आपकी कोई एक रचना तो देखी थी मैंने बहुत पहले, फाइल में. ऐसा करिये, कुछेक ताजी, दमदार रचनायें, फोटो सहित, और भिजवा दीजिये.
रहने दीजिये मस्ताना साहब. आपकी महफिल को देखकर लगता है, आपने सत्य की खोज कर ली है. अब और सत्य की भला आपको, क्या जरुरत है.
राहुल, शीघ्रता से बाहर निकल आया. निकलते-निकलते उसने देखा कि मस्ताना साहब ने होंठ बिचका लिये हैं, मानो काफी में कड़वाहट, कुछ ज्यादा घुल गई हो.

डॉ० चकोर सम्मानित

हिन्दी और अंगिका के सुप्रसिद्ध लेखक एवं कवि डॉ० नरेश पाण्डेय चकोर को अखिल भारतीय हिन्दी प्रसार प्रतिष्ठान पटना की ओर से दिनांक २३ नवंबर २००८ में हुए अखिल भारतीय लघु कथा सम्मेलन में 'अंगिका भूषण' उपाधि से सम्मानित किया गया. अंग माधुरी, भाषा भारती संवाद एवं प्रज्ञावाणी के सम्पादक डॉ० चकोर को अब तक देश के विभिन्न संस्थाओं से चार दर्जन सम्मान पत्र प्राप्त हुए है.

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नामः श्री सीताऽयण
रचनाकारः पंडित नरेश कुमार शर्मा
कीमतः१०१ रुपये
सम्पर्कः सी-८०३, सेटेलाइट पार्क गुफा मार्ग, जोगेश्वरी(पूर्व), मुंबई-४०००६०
समीक्षकः नन्दकुमार मनोचा 'वारिज'

सुप्रसिद्ध कवि, उपन्यासकार, संपादक तथा फिल्मकार पं. नरेश कुमार शर्मा ने रामकथा को आधार बना कर सीता के राम के प्रति अखण्ड प्रेम को अपनी सद्य प्रकाशित काव्य कृति सीताऽयण में बड़ी कुशलता और व्यापकता से उभारा है. राम और सीता को कवि ने ईश्वरत्व भावना से ओतप्रोत होकर चित्रित करते हुए उन के मानवीय पक्ष को भी उद्‌घाटित किया है. इसके साथ ही दोनों की परिणति आत्मा और परमात्मा के मिलन में होती है और एक प्रेमादर्श की स्थापना स्वतः हो जाती है.

यह एक ऐसा काव्यग्रंथ है जो सीता के नारी सुलभ चरित्र को अन्तःस्पर्शी भावमयता के साथ प्रस्तुत करता है. इस काव्य ग्रंथ को सात अध्यायों के मणिमाणिकों से पिरोया गया है. प्रत्येक अध्याय को विभिन्न शीर्षकों से वन्दनवार की तरह सजाया गया है जिससे प्रतिपादित विषय वस्तु और तन्निहित प्रकट भावना का भान हो सके. सीताऽयण को प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत खण्ड-काव्य कहा जा सकता है. समीक्ष्य काव्य ग्रंथ का प्रथम अध्याय सीता-विलाप से प्रारंभ होता है जिसमें रावण सीता का अपहरण कर लिये जा रहा है. सीता अपने को धिक्कार रही है कि उस ने राम को स्वर्णमृग के पीछे क्यों जाने दिया. स्वर्णमृग को प्राप्त करना स्त्री सुलभ आकांक्षा का ज्वलन्त उदाहरण है.

द्वितीय अध्याय में लक्ष्मण की विवशता का निरुपण किया गया है. लक्ष्मण ने सीता के कटु वाक्य सुन कर राम के पीछे जाना निश्चित किया और एक लक्ष्मण रेखा खींच दी और सीता मां को उसे न पार करने का निर्देश भी दे दिया. फिर भी सीता ने ऋषि रुप में आये रावण को भिक्षा देने के बहाने रेखा को पार किया और अपहृत हो गई. राम लक्ष्मण सीता को देखने वन में घूमते है-'राम लखन चल आये, पर्ण कुटिया पर अपनी, देख जानकी विहीन, सुधि ा-बुद्धि भूले अपनी. तदनन्तर राम कह उठते है-'सीते, सीते, कहां गई तू सीते, यही कुफल जीवन का, पुण्य मेरे सब रीते.' यह राम का सीता के प्रति प्रेम ही है जो राम को विहवल कर रहा है-'प्रेम डगर पर चलना, बड़ा कठिन होता है, जग की बाधाओं से, प्रेम ही निपटता है.'

तृतीय अध्याय में सीता की खोज प्रारंभ होती है. मार्ग में जटायु घायलावस्था में मिल जाता है जो बताता है कि सीता का हरण रावण ने किया है. राम रावण के विनाश का प्रण करते है. रावण सीता का बाल भी बांका नहीं कर सका. प्रेम में ईश्वरीय शक्ति है. सीता राम के चिन्तन में रात्रि दिवस पड़ी रहती है अशोक वाटिका में.

राम सीता के वियोग में कहते है-'सीता ही है मेरे, जीवन का सुखाधार, सीता प्रेम स्वरूपिणी, प्रेम है मूलाधारा' आगे कवि ने नारी और पुरुष को एक लय माना है-'नारी रहे पुरुषमय, पुरुष नारी मय रहे, रहे दोनों प्रेममय, मन परमात्मा मय रहे.' नारी को यदि भोग्या माना जायेगा तो उसका विनाश निश्चित है.'नारी तन भोग बुरा सुख है नारी का मन, बस रावण भोगे तन, होगा अब निश्चय पतन.' चतुर्थ अध्याय में अशोक वाटिका में सीता का निवास और राक्षसियों द्वारा दिये गये संत्रास का चित्रण है जिस में सीताराम के चिन्तन में, उनके नाम जाप में अडिग रहती है और रावण के समस्त प्रलोभनों को ठुकराा देती है. 'राम राम रट सीता, राममय स्वयं ही भई, अन्तर-बाहर श्रीराम, सिय वैदेही हुई.' सीता ने मृत्यु भय पर विजय प्राप्त की और रावण को हरा दिया. कवि इसका कारण सीता का प्रेम ही मानता है और कहता है-'प्रेमी की परिभाषा, हृदय में चरम विश्वास/ हृदय की गहनता ही, उसका महाकाश.' इसी प्रकार पंचम अध्याय में नर देह राम का दुःख भोग है. वे विरहाकुल है-ईश्वर राम अवतरे, जग का करने कल्याण/देह जनित सब सुख दुःख हैं झेलते सप्रमाण.' राम के भीतर सीता के लिये कुछ भी करने का संकल्प है. उनको दुःख है कि सीता ने लक्ष्मण रेखा क्यों लांघी और स्त्री धर्म को इंगित करते है.'हां सीते क्यों लांघी तूने लक्ष्मण रेखा, स्त्री धर्म यही परम है, पूज्य देहरी रेखा.'

षष्ठ अध्याय में राम सीता का मिलन हुआ. राम सीता को लेकर अयोध्या लौटे पर सीता पर परगृह रहने का लांछन लगा. राम को राजपाट व्यर्थ लगने लगता है. अग्निपरीक्षा के पश्चात् भी प्रजा, सीता से संतुष्ट नहीं. कवि राम सीता के मिलन को जीव-ब्रहम का मिलन मानता है. 'श्रीराम सीता मिलन, जीव ब्रहम का सम्मेलन, आनंद विराजे हृदय, अधंकार का उन्मूलन.'

सप्तम अध्याय में राम के अन्तर्मन की व्यथा उभरती है कि यदि सीता रहती है तो यह राज धर्म के विरुद्ध होगा और यदि मैं सीता का त्याग करता हूँ तो मैं अपनी आत्मा का त्याग करता हूँ.'प्राणोत्सर्ग करूं तुरत/सह न सकूं दुख इतना/सीता मेरी आत्मा, जगत विष भरा कितना' राम को इस अन्तर्द्वन्द से बाहर निकालने के लिए सीता ही आगे बढ़ कर राम से कहती है और वर मांगती हे अपने प्रिय स्वामी राम से प्रथम, कि राम राजा बने रहें दूसरे मुझे स्वयं वन आने की अनुमति दें.'मुझको वचन दिया है, मेरी बात

निभाओ/ मैं जो मांगू पाऊँ, यही दया दिखलाओ.'राम सीता से मांगती है-'पहला वर यह स्वामी, राजधर्म निभाएं आप, अयोध्या में ही रहें, महाराजा राम आप. दूजावर जीवन धन, मैं होऊँ वनवासी, मुझे निकालें घर से, रहूं सदा उरवासी.'

यहां कवि ने लोकधारणा के बिल्कुल उलट लिखा है. अब तक मान्यता यही रही है कि लोक-भय से राम ने सीता को निर्वासित कर दिया था पर यहां सीता स्वयं वन को जाने के लिए राम से निवेदन करती है.

संपूर्ण सीताऽयण में प्रेम की ही विभिन्न संदर्भो में व्याख्या की गई है. राम और सीता के अविच्छन्न प्रेम को कहीं ईश्वरत्व और कहीं मानवीय सांचे में ढाला गया है.

लघु कथा संग्रहः झूठे सच,
संपादकः विश्व प्रताप भारती
पताः बरला, अलीगढ़, उ०प्र०
समीक्षकः डॉ० धीरजभाई पणकर
मूल्यः ८० रुपये

युवा सम्पादक, कवि, लघुकथाकार विश्व प्रताप भारती इस संग्रह से पूर्व राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में काफी छपे है और अब तक कुल आठ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है. संपादन के क्षेत्र में अच्छी पकड़ है. २७ वर्षीय विश्वप्रताप भारती ने कम उम्र में ही साहित्य जगत में अच्छी पहचान बनाई है. प्रस्तुत लघु कथा संग्रह भी इनके संपादक कला कौशल का ही एक नमूना है. अपने संपादकीय में भारती जी ने लिखा है-'इतनी बात तय है-लघु कथा, लघु कथा ही है, इसे भला और क्या नाम दें. अधिकांशतः तीन-चार पैरा में पूरी होने वाली लघु कथा अपने कथोपकथन, संवाद, और भाषा शैली पर जीती है. आकर्षक आवरण पृष्ठ, साफ मुद्रण एवं उत्तम कोटि के कागज पर तैयार इस संग्रह में नये पुराने लेखकों की करीब ६८ लघुकथाएं संग्रहित है. आज लघुकथा की प्रांसगिकता सर्वविदित है. यह खरी तभी उतरती है जब कम से कम शब्दों में अधिक बात कहीं गई हो. इस दृष्टि से यह संग्रह लगभग सही है. वैसे तो संकलन की समग्र लघुकथाए पठनीय है, लेकिन कुछ दमदार है. डॉ० परमलाल गुप्त की 'आडम्बर' पति पत्नी के बीचद्वारा संकलित लघुकथा संग्रह में६४ पृष्ठीय इस संग्रह में राष्ट्रीय गीत, मुक्तक एवं ग़ज़लों का संग्रह है.

स्वतंत्रता तो मेरे इंडिया की बड़ी शान है,
उसका दिल तो रो रहा कि वह अभी गुलाम है।

++++++++++++++++++++++++

गॉधी के स्वप्नलोक का बजूद न बेचों।
बेटो तुम मेरे मॉग की सिंदूर न बेचो।।

++++++++++++++++++++++++++

पालो इस सुत इक सूता, वृक्ष लगाओ पॉच।
अर्जित विद्या धन करो, न हीरा न कॉच।।

कुछ ऐसी पंक्तिया है जो मुझको प्रभावित करती है, हो सकता है आपको भी प्रभावित करें.

इनके अतिरिक्त निम्न शीर्षकों की रचनाएं भी प्रभावशील है-जननी समान है जन्मभूमि, जतन से ये रखना वतन, बेटों अहसान को मत भूलो, क्यों नफरत की गठरी सर पर रखते हो, सारा जमाना जल रहा है, कलम का सम्मान करना सीख लो, मॉ बाप को मत भूलना. रचनाकार को हार्दिक बधाई

++++++++++++++++++++++++++++++++

कहॉनी संग्रह का नामः उनका मन

लेखकः देवेन्द्र कुमार मिश्रा

संपर्क सूत्रः जैन हार्ट क्लीनिक के सामने, एस.ए. एफ. क्वार्टस, बाबू लाईन, परासिया रोड, छिदवाड़ा, म. प्र. ४८०००१
प्रकाशकःमेघ प्रकाशन,
२३६, गली कुंजस, दरीबाकला, चांदनीचौक,
दिल्ली-११०००६

++++++++++++++++++++++++++++++++

प्रस्ताव आमंत्रित है

सम्मानित प्राधानाचार्य/प्राचार्य

महोदय,

हिंदी के विकास के लिए पूर्ण रुपेण सक्रिय विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद अपने कार्य क्षेत्र को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष से प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/ स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को सम्मानित करने का निर्णय लिया है. इसमें आपसे आपके विद्यालय /महाविद्यालय में वर्ष २००८ की परीक्षा में हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं के अंक पत्र, उनका नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित प्रति के साथ १० जनवरी २००६ तक आमंत्रित है. सम्मान समारोह फरवरी ०६ में प्रस्तावित है. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. आशा है आप हमारे आग्रह को स्वीकार कर अपना प्रस्ताव हमें शीघ्र भेजने का कष्ट करें. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में साहित्य उदय सम्मान व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी.

राज्य स्तरीय बाल काव्य प्रतियोगिता

सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश से ऐसे छात्र/छात्राएं जो हिंदी में कविता, ग़ज़ल, दोहा आदि लिखने का शौक रखते हों, उनसे अपनी एक कविता जिसे काव्य पाठ करना चाहते हो, एक फोटो व एक टिकट लगा पता लिखा जवाबी लिफाफा आमंत्रित है। प्रतिभागी की उम्र १५ वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए. १० वर्ष से कम उम्र के छात्र किसी दूसरे की कविता भी पढ़ सकते हैं उनका प्रस्तुतीकरण देखा जाएगा। यह प्रतियोगिता फरवरी ०६ में इलाहाबाद में आयोजित की जाएगी. विस्तृत जानकारी बाद में प्रेषित की जाएगी। प्रेषण की अंतिम तिथि १० जनवरी २००६ है।

प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले को सम्मानित किया जाएगा, उपहार सामग्री, प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया जाएगा।

अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्न पते पर प्रेषित करें:

सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान
एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: sahityaseva@rediffmail.com Mo.: (O) 09335155949,

सम्पर्क व्यक्तिः

ईश्वर शरण शुक्लः सचिव, युवा शाखा: 09935174869
कृष्ण गोपाल श्रीवास्तवः संयुक्त सचिव, युवा शाखा: 09936834672
अशोक कुमार गुप्ताः स्नेहाश्रम सचिव, युवा शाखा: 09935157849
एस.के.तिवारीः कार्यसमिति सदस्य, युवा शाखा: 099

भारत सरकार एवं यू.जी.सी द्वारा मान्यता प्राप्त

जिसस क्राइस्ट रिजनल पालिटेक्निक

जेल रोड पॉवर हाउस के पास, अंधा खाना, नैनी, इलाहाबाद-२११००८

प्रवेश प्रारम्भ

- तीन वर्षीय डिप्लोमा प्रोग्राम
- डिप्लोमा इन सिविल इंजीनियरिंग
- डिप्लोमा इन मेकेनिकल इंजीनियरिंग
- डिप्लोमा इन इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग
- डिप्लोमा इन इलेक्ट्रानिक्स एण्ड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग
- डिप्लोमा इन कम्प्यूटर सांइस

विशेष

- आई.टी.आई. एवं इंटर मैथ के छात्र/छात्राओं को सीधे तीसरे सेमेस्टर में प्रवेश
- आकर्षक एवं सुसज्जित कम्प्यूटर लैब, पुस्तकालय, भौतिकी/रसायन प्रयोगशाला, मैकेनिकल एवं इलेक्ट्रिकल प्रयोगशाला
- योग्य, अनुभवी तथा प्रशिक्षित फेकेल्टी

सम्पर्क समयः प्रातः १० बजे से अपरान्ह ४ बजे तक

सम्पर्क करें:

श्री एल.एम.पाल
कंट्रोलर, 9919095574

श्री प्रभाकर द्विवेदी
सेन्टर मैनेजर
9369389136, 9415128575

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93,नीम सराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया. **डाक पंजीयन संख्याः** एडी.306/2006–08 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380 **संपादकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी